वार्षिक पत्रिका

2025

सिराज शिखा

राजकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय
बंजार, जिला कुल्लू, हि. प्र.

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा 'बी' मूल्यांकित संस्थान

(Left to right) Sh. Rajeev Parmar(Bot.), Dr. Provinder Kumar (Comm.), Sh. Vikas Negi (Maths), Sh. Deepak K. Singh(Geo), Dr Vikas Kumar (Music), Dr Ramesh Yadav (Zoo.), Dr Leena Vaidya (Eng.), Sh. Hemendra (Phy.), Dr Renuka Thapliyal (Geo.), Dr Dabe Ram (Comm.), Sh. R.K. Singh (Principal, Pol. Sc.) Sh. Anshul (Music), Miss Lata (Hindi), Dr Hemlata (Skt.), Sh. Tikkam Ram (History), Dr Yograj (Pub.Adm.), Dr Surender (Pol. Sc.) Sh. Ramanand (Socl.), Dr Sharwan Kumar (Eco.), Dr Anil (Maths), Dr Pravesh (Phy. Edu.)

अनुक्रम

क्रं.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
01.	संदेश (डॉ. अमरजीत के. शर्मा, निदेशक, उच्चतर शिक्षा)	03
02.	संदेश (श्री राजेश के. सिंह, प्राचार्य)	04
03.	सम्पादकीय (डॉ. लीना वैद्य, मुख्य संपादक)	05
04.	वार्षिक गतिविधियां	06–29
05.	सिराज उत्सव की झलकियां	30
06.	द प्राइड ऑफ अवर कॉलेज	32
07.	द अवार्ड विनर्ज़	33–35
08.	संपादक मण्डल (छात्र)	36
09.	विविध : कविताएं, आलेख, लोक–कथाएं, कहानियां	38–60

Statement about ownership and other particulars of *Siraj Shikha* Required under rule-8 of press and registration of Books Act.

Form -(IV)

(see Rule-8)

Place of publication	:	Banjar
Periodicity of its publication	:	Annual
Owner's Name	:	Sh. Rajesh K. Singh
Address	:	Principal Govt. College, Banjar
		Distt. Kullu (H.P.)
Name of Printing press.	:	Himtaru Prakashan Samiti, Kullu, H.P.
Nationality	:	Indian
Address	:	Near Main Post-Office, Dhalpur, Kullu.
Chief Editor's Name	:	Dr. Leena Vaidya
		(Assistant Prof. English)
Nationality.	:	Indian
Address	:	Govt. College, Banjar
		Distt. Kullu, H.P.

I, Rajesh K. Singh hereby declare that particulars given above are true and correct to best of my knowledge and belief.

Sd/-

Rajesh K. Singh

Principal Govt.College Banjar,

Distt Kullu, Himachal Pradesh.

The views expressed by the writers are their own and the Editorial Board does not necessarily agree to them.

Editor-in-Chief

Cover Page Picture Credit : Sh. Rajiv Parmar (Assit. Prof.)
Front & Back Cover Design : Dr. Leena Vaidya (Assit. Prof.)

Dr. Amarjeet K. Sharma
Director (Higher Education)

Directorate of Higher Education
Himachal Pradesh
Shimla - 171001
Tel. : 0177-2656621 Fax : 0177-2811347
E-mail : dhe-sml-hp@gov.in

MESSAGE

It is a matter of immense delight for me to know that your college is going to publish the college magazine.

College magazine is a very useful medium for young minds to express their bristling ideas and thoughts. It gives a chance to students, the budding writers, to get the attention of others through their creative and contemporary writings. It is an essential ingredient of college regular activities and documentation of such events. The true purpose of higher education is to open the horizons for the curious young minds and to refine and polish them in such a way that they become responsible citizens of our country.

I wish your college a great future and grand success to the college magazine. I also congratulate the Editor(s) of the magazine and wish everyone all the best in their ventures.

Jai Hind.

(Dr. Amarjeet K. Sharma)

प्राचार्य की कलम से

राजकीय महाविद्यालय बंजार की वार्षिक पत्रिका 'सिराज शिखा' के नए अंक का प्रकाशन हम सभी के लिए हर्ष का विषय है। पिछले दिनों मुझे इस पत्रिका के हाल के वर्षों की प्रतियों को देखने का अवसर मिला। इसमें प्रकाशित विद्यार्थियों की रचनाओं की मौलिकता एवं सृजनात्मकता ने मुझे प्रभावित किया। वर्तमान सूचना एवं संचार क्रांति के दौर में इंटरनेट, मोबाइल व सोशल मीडिया ने हम सभी को किताबों से लगभग दूर कर दिया है। परिणामतः कुछ लिखना, इसके लिए सोचना तथा युवा छात्र–छात्राओं को इससे जोड़ना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है लेकिन शिक्षण कार्य से जुड़े हम सभी का यह दायित्व है कि हम विद्यार्थियों को किताबों की दुनिया से जोड़ सकें। उन्हें यह समझा सकें कि किताबें हमारी सबसे अच्छी दोस्त हैं, जो न सिर्फ मानसिक एवं भावनात्मक रूप से हमें परिपक्व बनाती हैं बल्कि कैरियर निर्माण में भी सहायक होती हैं। किसी भी महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका केवल लेखों का संकलन मात्र नहीं होता है बल्कि महाविद्यालय की बौद्धिक क्षमता का एक आईना भी होता है, जिसमें हम छात्र–छात्राओं की रचनात्मक प्रतिभा एवं संपादकीय कौशल को देख सकते हैं। इस दृष्टि से 'सिराज शिखा' का आकलन मुझे उत्साह देता है और मैं भविष्य के लिए आशान्वित महसूस करता हूं। मैं हमेशा यह मानता हूं कि जीवन में सपनों का होना जरूरी है। विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानने वाला मन तथा कोशिश करते रहने का जज्बा किसी भी सफल जीवन का आधार है। आज जब हमारे युवाओं में नशे, अवसाद, परायापन तथा भविष्य को लेकर चिंता और अनिश्चितता ज्यादा है। तब इस बात की आवश्यकता और भी अधिक हो जाती है कि हम उनकी सकारात्मक क्षमता को बढ़ाने में सहायक हों। हालात हमेशा हमारे अनुकूल नहीं होते हैं लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हमेशा प्रयास करते रहना ही पुरुषार्थ है। इससे सफलता की संभावना भी बढ़ जाती है। आज का युवा कल का भविष्य है। उनकी सफलता हमारी सफलता है। उनका सपना हमारा सपना हो– मैं इस बात की कामना करता हूं तथा 'सिराज शिखा' युवाओं के बौद्धिक विकास का एक माध्यम बन सके, ऐसी उम्मीद करता हूं। इसी आशा और उम्मीद के साथ 'सिराज शिखा' का नवीन अंक आपके समक्ष है। मैं मुख्य संपादक, शिक्षक संपादक, छात्र संपादक तथा सभी रचनाकारों को बधाई देता हूं एवं उनके स्वस्थ जीवन एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

राजेश के. सिंह
प्राचार्य

Editorial Board

Left to right : **Dr Dabe Ram (Comm.), Sh. Vikas Negi (Sci.), Dr Hemlata (Skt.), Sh. R.K. Singh (Principal), Dr Leena Vaidya (Editor-in-Chief; Eng.), Smt. Lata (Hindi), Sh. Tikkam (Pahari)**

Editorial

"You can't go back and change the beginning, but you can start where you are and change the ending."

- C.S. Lewis

These profound words from C.S. Lewis serve as a powerful reminder that life is shaped not by the past but by the choices we make in the present. The college journey is a pivotal moment, a threshold that provides an opportunity to reflect on the past, reimagine the present, and rewrite the future. Just as Lewis suggests, students have the power to start anew, change the trajectory of their lives, and create a brighter future. So, embrace this freedom with courage, curiosity, and a commitment to growth.

In this issue of Siraj Shikha, a multilingual platform exhibiting students' creative genius, we are proud to feature a collection of poems and stories written by our talented students. These pieces capture the essence of their collective experiences, from personal struggles and triumphs to reflections on social issues and the world around them. You will find poignant poems about love, loss, and self-discovery, alongside thought-provoking stories that tackle identity, social justice, and the human condition. Our students have poured their hearts and souls into these works, and we are happy to share them with you.

The challenging task of editing this magazine was made possible by the dedicated support of Dr. Hemlata, Dr. Dabe Ram, Sh.Vikas Negi, Sh. Tikkam, Smt. Lata (Editorial Board), and Dr Vikas Kumar. The invaluable contributions of the editorial board have improved the quality and presentation of the magazine, and the hard work of a motivated team of student editors and writers has played a crucial role in envisioning the layout of Siraj Shikha. The magazine embodies the institutional spirit, reflecting the collective efforts, thoughts, and aspirations of both students and staff members.

I sincerely thank Sh. Rajesh K. Singh (Principal) for his unwavering support during the planning and publication of Siraj Shikha.

Dr. Leena Vaidya
Editor-in-Chief

वार्षिक गतिविधियां

सत्र : 2024–25

19 मई 1999 में महाविद्यालय के प्रारम्भ में यहाँ मात्र 5 प्राध्यापक तथा 84 विद्यार्थी थे। आज विद्यार्थियों की संख्या 752 पंहुच गई है। शैक्षणिक कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए प्राचार्य के अतिरिक्त 19 प्राध्यापक तथा 08 गैर शिक्षक कर्मचारी कार्यरत हैं।

इस शिक्षण संस्थान में एक कला संकाय भवन है जिसमें विभिन्न प्रयोगशालाएँ, एक सेमिनार हॉल, परीक्षा हॉल, आई॰टी॰ प्रयोगशाला और पुस्तकालय हैं।

उच्च शिक्षा की गुणवता को बनाए रखने के लिए आन्तरिक गुणवता आश्वासन सेल (IQAC) का गठन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा–निर्देशों के तहत किया गया है। सत्र 2024–25 में डॉ. रमेश कुमार Co-Ordinator (IQAC) और डॉ. लीना वैद्या तथा श्री दीपक कुमार सिंह ने Co-Coordinatords के पद पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। IQAC और वार्षिक प्रतिवेदन के आधार पर महाविद्यालय का मूल्यांकन NAAC द्वारा किया जाता है।

इसी मूल्यांकन के आधार पर 20 से 22 अक्तूबर 2016 में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रमाणन परिषद् (NAAC) द्वारा महाविद्यालय को बी' ग्रेड प्रदान किया गया था। सत्र 2024–25 में सरकार द्वारा SAR (Self Assesment Report) के माध्यम से किए गए महाविद्यालयों के मूल्यांकन में बंजार महाविद्यालय प्रदेश के 141 महाविद्यालयों में 42वें स्थान पर रहा जबकि Tier-II में हमारा महाविद्यालय कुल 42 महाविद्यालयों में 779 अंक लेकर 13वें स्थान पर रहा। यह बंजार जैसे छोटे महाविद्यालय के लिए अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसका कारण यह भी है कि महाविद्यालय में शिक्षा के साथ खेल–कूद, राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS), राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) थल स्कन्ध, रोवर्स–रैंज़र और विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों को भी समान महत्व दिया जाता है।

विशेष उपलब्धियां

13 और 14 अगस्त 2024 को राजकीय महाविद्यालय बंजार में "Identity, Culture, Development and Environment in the Himalayas: Challenges and Future Prospects" विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें उच्च शिक्षा निदेशक डॉ. अमरजीत शर्मा मुख्य अतिथि, डॉ. हरीश कुमार विशिष्ट अतिथि व डॉ. गोपाल संघायक, OSD Colleges cum State Nodal Officer RUSA,विशेष अतिथि के रुप में आभासी तौर पर उपस्थित रहे। डॉ. जे.सी. कुनियाल, Senior Scientist and Head of Centre of Environmental Assessment and Climate Change, G. B. Pant National Institute of Himalayan Environment, Almora Uttrakhand, and an Honorary Fellow Bath Spa University London मुख्य वक्ता व डॉ. स्वागता बसु, डॉ. कृष्णा प्रसाद भण्डारी, डॉ. दिप्ती नायक, डॉ. प्रिया रंजन, डॉ. सचिन कुमार, डॉ. जे. डी. सोनी, डॉ. पवन कुमार और रुची रमेश आमन्त्रित वक्ता के रुप में उपस्थित थे।

डॉ. रेनुका थपलियाल को शिक्षक दिवस के अवसर पर ईग्नू रीजनल सेंटर शिमला द्वारा वर्ष 2024 में Utkrisht Seva Award for stellar services in different capacities and best Coordinator पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

➢ डॉ. प्रवेश शर्मा सत्र–2024–25 के लिए HPU Sports and Co-Curricular activities Council के Vice-President चुने गए। इसके अतिरिक्त 38th National Games Uttrakhand 2025 में डॉ. प्रवेश कुमार का चयन National Technical official (Indoor Handball) के रुप में हुआ जो महाविद्यालय के लिए गौरव की बात है।

➢ 22 से 25 अक्टूबर 2024 को आयोजित राज्य स्तरीय युवा महोत्सव ग्रुप–2 में महाविद्यालय की छात्रा सुनैना (बी.ए. तृतीय वर्ष) ने लोक गायन में द्वितीय स्थान व अनु कुमारी (बी.ए. द्वितीय वर्ष) ने शास्त्रीयगायन में तृतीय स्थान हासिल कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया।

➢ महाविद्यालय के प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ष के 20 विद्यार्थियों के हिमतरु मासिक पत्रिका द्वारा प्रकाशित विशेषांक– ''स्मृतियों में कुल्लू दशहरा,'' ISSN2349-3054, में 8 शोध पत्र प्रकाशित हुए।

➢ 24 मई 2024 को बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर डॉ. श्रवन कुमार को माननीय राज्यपाल श्री शिव कुमार शुक्ल द्वारा सातवें 'भारत–तिब्बत मैत्री सम्मान' 2024 से सम्मानित किया गया।

➢ 07 फरवरी 2025 को महाविद्यालय में ''ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क में जैव विविधता संरक्षण जागरुकता'' विषय पर अन्तर महाविद्यालयी संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के 25 विभिन्न विषयों के शिक्षकों तथा 20 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। इस अवसर पर राजकीय महाविद्यालय बंजार तथा राजनिति विज्ञान विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय दिल्ली के मध्य जैव विविधता संरक्षण के लिए भविष्य में भी सहयोग के लिए सहमति बनी है।

सत्र 2024–25 में इग्नू सेंटर–1148 बंजार को **Best Lerner Support Centre Award** से इग्नू रीजनल सेंटर, शिमला में सम्मानित किया गया जो कि महाविद्यालय के लिए गौरव की बात है।

➢ कैडेट विजय राज, ने Annual Trainig Camp 207, 239 Transit Camp Pandoh में Rifle Shooting Competition (SD) में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

➢ अंडर ऑफिसर टीनू देवी ने Annual Trainig Camp 207, 239 Transit Camp Pandoh में Rifle Shooting Competition (SW) में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

विकासात्मक कार्य

आधुनिक युग सूचना एवं प्रौद्योगिकी का युग है जिसके परिणामस्वरुप शिक्षा का स्वरुप भी बदल रहा है। इसलिए उत्कृष्ट महाविद्यालय योजना तथा रुसा–II अनुदान के तहत महाविद्यालय मे सूचना एवं प्रोद्यौगिकी (Information and Technology) सेक्टर के विस्तारीकरण पर अधिक बल दिया गया है। महाविद्यालय की वेबसाईट विकसित की गई है जिसमें विद्यार्थियों तथा अन्य हितधारकों को जानकारी प्रदान करने के लिए दैनिक गतिविधियों से सम्बन्धित सूचना का अभिभारण (Upload) किया जाता है।

महाविद्यालय में प्रवेश से लेकर कार्यालय का कार्य ऑनलाइन प्रबन्धन प्रणाली (Online Management System) के द्वारा किया जाता है, जिससे सभी विद्यार्थी इस सुविधा से लाभान्वित हो रहे है तथा वितीय रिपोर्ट भी स्वचालित रुप से उत्पन्न होती है।

विद्यार्थियों में संचार कौशल विकसित करने हेतु **भाषा प्रयोग शाला (Language Lab)** और भूगोल विषय में भौगोलिक सूचना प्रणाली से संबधित GIS Lab स्थापित हो चुकी है। महाविद्यालय में खेल अवसंरचना (Sports Infrastructure) का कार्य संपूर्ण हो चुका है।

सुरक्षा नियमों को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय भवन व परिसर में 12C.C. TV Cameras हैं जिसके माध्यम से छात्र–छात्राओं की गतिविधियों व सुरक्षा को प्राध्यापकों द्वारा सुनिश्चित करते है।

सत्र 2024–25 में बॉस्केट बॉल कोर्ट का कार्य प्रगति पर है। प्रस्तावित कन्या छात्रावास की Boundary Fencing का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। कॉलेज परिसर में Inter Locking टाईल्स का कार्य प्रगति पर है।

पुस्तकालय

एक अच्छी पुस्तक सर्वोतम मित्र होती है। पुस्तकालय हमें सिखाता है कि पढ़ना इसलिए आवश्यक नहीं है कि हमें किसी का विरोध करना है या किसी को गलत सिद्ध करना है, बल्कि प्रत्येक बात को तोलने एवं उस पर विचार करने के लिए अध्ययन आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए महाविद्यालय के पुस्तकालय में छात्र एवं छात्राओं के लिए लगभग 9171 पुस्तकों का संग्रह है। जिनमें विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं से संबधित पुस्तकें उपलब्ध हैं। इसके अलावा पुस्तकालय में दैनिक ट्रिब्यून, 'द इंडियन एक्सप्रैस, पंजाब केसरी, अमर उजाला, दिव्य हिमाचल उपलब्ध हैं। इसके साथ विभिन्न पत्रिकाओं में करेंट अफेयर, प्रतियोगिता दर्पण, आउटलुक, जूनियर सांईस रिफरैशर, सांईस रिफरैशर शामिल हैं। पुस्तकालय में पुस्तकों की 'डिजिटल कैटालॉगिंग कर दी गई है। पुस्तकालय को "INFLIBNET N-LIST" की सदस्यता उपलब्ध करवा दी गई है जिसका लाभ प्राध्यापक शोध कार्य के लिए कर सकते हैं। पुस्तकालय 10 से 5 बजे तक छात्र–छात्राओं के लिए खुला रहता है।

छात्रवृतियाँ

सत्र 2024–25 में अलग–अलग योजनाओं के द्वारा विभिन्न वर्ग के विद्यार्थियों को 66 छात्रवृतियाँ प्रदान की गई जिसमें 10 छात्र तथा 56 छात्राएं शामिल है।

सूचना प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला

महाविद्यालय में सूचना प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला की स्थापना की गई है। प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला में इस समय 20 कम्प्यूटर एक डिजीटल पोडियम तथा प्रोजेक्टर की सुविधा उपलब्ध है। अध्यापन कार्य रूचिपूर्ण बनाने एवं नई तकनीक से जोड़ने हेतु शैक्षणिक सत्र 2024–25 में तीनों संकाय की कक्षाएं समय–समय पर इस प्रयोगशाला मे लगायी जाती हैं। डॉ. अनिल कुमार के कुशल नेतृत्व मे विद्यार्थियों को परीक्षा परिणाम एवं ऑनलाइन परीक्षा एवं छात्रवृति फॉर्म भरने की सुविधा प्रयोगशाला में उपलब्ध करवाई गई है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

महाविद्यालय में सभी वर्ग के विद्यार्थियों के लिए तथा विशेषकर नियमित अध्ययन से वंचित विद्यार्थियों के विकास के लिए इन्दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय का केन्द्र सन् 2008 में अस्तित्व में आया। डॉ. रेणुका थपलियाल समन्वयक और सह–समन्वयक डॉ. योगराज के कुशल नेतृत्व में इस अध्ययन केन्द्र में 430 विद्यार्थी पंजीकृत हैं। इस समय यहां कला, वाणिज्य, पर्यटन तथा लाईब्रेरी सांईस आदि क्षत्रों में सर्टीफिकेट, डिप्लोमा, स्नातक तथा स्नातकोतर पाठ्यक्रम हैं। महाविद्यालय की वैबसाईट पर इग्नू के लिए एक अतिरिक्त पोर्टल बनाया गया है जिसमें इग्नू के कार्यों से सम्बंधित जानकारी समयानुसार उपलब्ध करवाई जाती है।

अध्यापक–अभिभावक संघ

संस्थान के विभिन्न विकासात्मक कार्यों, छात्रों, अभिभावकों और महाविद्यालय प्रशासन के बीच बेहतर तालमेल के लिए हिमाचल प्रदेश सरकार के नियमानुसार अध्यापक–अभिभावक संघ का गठन किया गया। इस वर्ष संस्थान के प्राचार्य डॉ. राजेश कुमार सिंह की अध्यक्षता में सत्र 2024–25 के लिए अध्यापक अभिभावक संघ के लिए निम्न पदाधिकारियों का चुनाव किया गया :–

प्रधान : श्री मोहर सिंह
उप–प्रधान : श्रीमती बबली देवी
सचिव : डॉ. डाबे राम
सहसचिव : श्री टिक्कम राम
मुख्य सलाहकार : श्री यज्ञ चन्द

पूर्व छात्र संघ

2018–19 में प्राचार्य महोदय की अध्यक्षता में पूर्व छात्र संघ का गठन सर्वसम्मति से 14 जुलाई 2018 को किया गया था। 10 अगस्त 2023 को पूर्व छात्र संघ ने नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। नई कार्यकारिणी इस प्रकार है :–

अध्यक्ष : राकेश ठाकुर
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : किशोरी लाल
उपाध्यक्ष : योगेश्वरी
सचिव : टिक्कम राम
संयुक्त सचिव : नूतन सिंह
कोषाध्यक्ष :
लेखा परीक्षक (शिक्षक) : डॉ. डाबे राम
लेखा परीक्षक (छात्र) : सतीश कुमार

शिक्षक सदस्य

श्री दीपक कुमार सिंह
डॉ. लीना वैद्या
डॉ. विकास कुमार
श्री रामानंद

छात्र सदस्य :

अशोक कुमार
डैविड काईस्था
चोबे राम
सोनी कुमार
ज्योतिरादित्य सिंह ठाकुर

महाविद्यालय पत्रिका

प्रौद्योगिकी के इस दौर में छात्रों की मौलिक लेखन प्रतिभा तथा वैचारिक चिंतन को अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से संस्थान की पत्रिका **'सिराज शिखा'** प्रतिवर्ष प्रकाशित की जा रही है, जिसमें विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों पर विचार एवं भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है। पत्रिका की मुख्य सम्पादक डॉ. लीना वैद्या हैं।

प्राध्यापकों की शैक्षणिक उपलब्धियां

महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक जहाँ विद्यार्थियों के प्रति निष्ठावान है, वहीं ज्ञानार्जन एवं शोध कार्यों में भी लीन हैं। सत्र 2024–25 में संस्थान के प्राध्यापकों की शैक्षणिक उपलब्धियों का विवरण इस प्रकार है :

डॉ. रेनुका थपलियाल (भूगोल विभाग) ने "Aging and Disability: A growing concern for India" नामक विषय पर

राजकीय महाविद्यालय सैंज (कुल्लू) में 17 से 19 जून 2024 को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, "The Himalayas Revisited : Identity and Development in Himalayan Region" में पत्र प्रस्तुत किया।

• 13–14अगस्त 2024 को राजकीय महाविद्यालय बंजार (कुल्लू) में आयोजित Identity, Culture, Development and Environment in the Himalayas: Challenges and Future Prospects, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "Reconceptualizing Tribal Identity: A Critical Discourse on the Interstices of Continuity and Change in the Anthropology of Cultural Persistence and Adaptation"नामक विषय पर पत्र प्रस्तुत किया।

• 12–13 अक्टूबर 2024 को राजकीय महाविद्यालय पांगी (चम्बा) में आयोजित Modernization, Globalization, and the Paradoxes of Transformation in Indian Society, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "The Paradox of Continuity and Change in Western Himalaya" नामक विषय पर पत्र प्रस्तुत किया।

• "Lost "Village" Perceptual or Real: Finding Answers in Environmental Ethics" in National Journal of Environment and Scientific Research (NJESR)-ISSN-2582-5836 May-2024, Vol-06 /Issue 05 DOI-10.53571/NJESR.2024.6.5.22-20-Page No. 22-30 में शोध पत्र प्रकाशित हुआ।

• "Can Shimla be Fitted into the Compact City Model?" in the journal The Scientific Temper (**UGC Care II**) E-ISSN: 2231-6396, ISSN: 0976-8653(2024) Vol. 15 (2): 2362-2374. Doi: 10.58414/SCIENTIFICTEMPER.2024.15.2.52 में शोध पत्र प्रकाशित हुआ।

• 20 से 26 जून 2024 तक Research Methodology and Academic Development पर साप्ताहिक संकाय विकास कार्यक्रम पूर्ण किया।

• राजकीय महाविद्यालय सैंज व गाडागुशैनी के पुस्तकालय निरीक्षण तथा SAR evaluation Committee के अन्तर्गत राजकीय महाविद्यालय कोटली, बासा तथा लम्बाथाच के निरीक्षण में अध्यक्ष की भूमिका निभाई।

• 11 से 12 फरवरी 2025 को Himalayan Council for Scientific Research राजकीय महाविद्यालय सैंज (कुल्लू) से संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "Village Studies and Issues in Western Himalaya" नामक विषय पर पत्र प्रस्तुत किया।

• 26 जनवरी से 01 फरवरी 2025 तक Research Methodology and Academic Development पर साप्ताहिक संकाय विकास कार्यक्रम पूर्ण किया।

डॉ. योग राज (लोक प्रशासन विभाग) ने "Aging and Disability: A growing concern for India" नामक विषय पर राजकीय

महाविद्यालय सैंज (कुल्लू) में 17 से 19 जून 2024 को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, "The Himalayas Revisited: Identity and Development in Himalayan Region" में पत्र प्रस्तुत किया।

• 20 से 26 जून 2024 तक Research Methodology and Academic Development पर साप्ताहिक संकाय विकास कार्यक्रम पूर्ण किया।

• 13–14अगस्त 2024 को राजकीय महाविद्यालय बंजार (कुल्लू) में आयोजित Identity, Culture, Development and Environment in the Himalayas: Challenges and Future Prospects,अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "Reconceptualizing Tribal Identity: A Critical Discourse on the Interstices of Continuity and Change in the Anthropology of Cultural Persistence and Adaptation" नामक विषय पत्र प्रस्तुत किया तथा संयोजक की भूमिका भी निभाई।

• 11 से 13अक्टूबर 2024 को राजकीय महाविद्यालय पांगी (चम्बा) में आयोजित Modernization, Globalization, and the Paradoxes of Transformation in Indian Society, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "The Paradox of Continuity and Change in Western Himalaya" नामक विषय पर पत्र प्रस्तुत किया।

• 11 से 12 फरवरी 2025 को Himalayan Council for Scientific Research राजकीय महाविद्यालय सैंज (कुल्लू) से संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "Village Studies and Issues in Western Himalaya"नामक विषय पर पत्र प्रस्तुत किया। 26 जनवरी से 01 फरवरी 2025 तक Research Methodology and Academic Development पर साप्ताहिक संकाय विकास कार्यक्रम पूर्ण किया।

डॉ. प्रवेश शर्मा (शारीरिक शिक्षा विभाग) ने 24 से 28 अगस्त 2024 तक बिलासपुर मे आयोजित एच पी स्टेट जूनियर तथा सीनियर बैडमिंटन चैंपियनशिप में तकनीकी अधिकारी के रुप में भूमिका निभाई।

• सत्र 2024–25 में एच. पी. यू. खेल और सह पाठयक्रम गतिविधि परिषद् के उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

• 23 से 26 अक्टूर 2024 राजकीय महाविद्यालय ज्वालाजी में आयोजित एच. पी. यू. ईंटर कॉलेज पुरुष कबड्डी में पर्यवेक्षक रहे। इसके अतिरिक्त सत्र 2024–25 में डॉ. प्रवेश शर्मा ने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय व अन्तर विश्वविद्यालय स्तर पर विभिन्न समितियों में समन्वयक, सदस्य, चयनकर्ता और प्रबंधक के रुप में अपनी सेवाएं दी।

डॉ. लीना वैद्या (अंग्रेज़ी विभाग) ने 13–14 अगस्त 2024 को राजकीय महाविद्यालय बंजार (कुल्लू) में आयोजित Identity, Culture, Development and Environment in the Himalayas: Challenges and Future Prospects, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

• 2024 में ETF(English Teachers' Forum) द्वारा प्रकाशित पुस्तक The ETF Mosaic: From Tabriz to Rumi's Soul; ISBN 978-93-6095-615-8, में ''पहचान'', ''मैं'' और ''जिन्दगी'' नामक तीन कविताएं प्रकाशित हुई।

श्री दीपक कुमार सिंह (भूगोल विभाग) ने 13–14अगस्त 2024 को राजकीय महाविद्यालय बंजार (कुल्लू) में आयोजित Identity, Culture, Development and Environment in the Himalayas: Challenges and Future Prospects, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "Best Practices and Innovative Ideas in Disaster Management: A Syudy of Kullu Distric" नामक विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

• International Journal of Management and Development Studies(ISSN-2320-0685) esa "After the 20th Century: Growth Convergence and Divergence in Mountainous States" विषय पर शोध पत्र प्रकाशित किया।

• UGC-Malviya Mission Teacher Training Centre, University of Jammu से 25 नवम्बर से 7 दिसम्बर 2024 तक दो सप्ताह का पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (Refresher Course)पूर्ण किया।

• 13 से 19 फरवरी 2025 को Thakur Jagdev Chand Memorial Government College Sujanpur Tihra द्वारा आयोजित सात दिवसीय FDP On Sustainable Development and Enviornmental Conservation में भाग लिया।

डॉ.डाबे राम (वाणिज्य विभाग) ने13–14अगस्त 2024 को राजकीय महाविद्यालय बंजार (कुल्लू) में आयोजित Identity, Culture, Development and Environment in the Himalayas: Challenges and Future Prospects, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठि में "Prospects of Tourism in Banjar Valley of District Kullu" नामक विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

• UGC-Malviya Mission Teacher Training Centre, University of Jammu ls Commerce and Management पर 7 से 21 नवम्बर 2024 तक दो सप्ताह का पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (Refresher Course) पूर्ण किया।

डॉ. प्रोविन्दर कुमार (वाणिज्य विभाग) ने 19 सितम्बर 2024 को राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी थरोली, उतराखंड में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "Intellectual Property Rights and Emerging Trends in India" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

• 29–30 नवम्बर 2024 को राजकीय महाविद्यालय संधोल में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "The Digital India : Initiative and Its Impact on the Indian Economy Through Digitalization"विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। सितम्बर 2024 में "International Journal of Creative Research Thought (IJCRT) esa "An Anaylsis of Fiscal Dynamics and Debt Management in Himachal Pradesh : Trends and Implication"विषय पर शोध पत्र प्रकाशित हुआ।

डॉ. सुरेन्दर (राजनीति विज्ञान विभाग) ने Himalayan Council for Scientific Research और राजकीय महाविद्यालय सैंज के सहयोग से (HCSR) International Conferenceमें ''Continity and Change in the Himalaya" पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

• 20 जून से 26 जून 2024 को Himalayan Council for Scientific Research द्वारा राजकीय महाविद्यालय सैंज में आयोजित सात दिवसीय FDPमें भाग लिया।

• 13–14 अगस्त 2024 को राजकीय महाविद्यालय बंजार (कुल्लू) में आयोजित Identity, Culture, Development and Environment in the Himalayas: Challenges and Future Prospects,अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "Reconceptualing Tribal Identity: A Critical Discourse on the Intersticesof Continuity and Challenges in the Anthropologyof Cultural Persistenceand adaption" नामक विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। इस संगोष्ठी में इन्होने संयोजक के रुप में भी कार्य किया। 11 से 13 अक्टूबर 2024 को Himalayan Council for Scientific Researchऔर राजकीय महाविद्यालय पांगी, चम्बा द्वारा आयोजित संगोष्ठी में "Paraddox of Continuity and Change in Wersten Himalaya" शोध पत्र प्रस्तुत किया।

• 11 से 12 फरवरी 2025 को Himalayan Council for Scientific Research राजकीय महाविद्यालय सैंज (कुल्लू) से संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "Village Studies and Issues in Western Himalaya"नामक विषय पर पत्र प्रस्तुत किया।

• 11 से 12 फरवरी 2025 को Himalayan Council for Scientific Research राजकीय महाविद्यालय सैंज (कुल्लू) से संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के 1.4 सत्र में अध्यक्षता की।

• 26 जनवरी से 01 फरवरी 2025 तक Research Methodology and Academic Development पर साप्ताहिक संकाय विकास कार्यक्रम पूर्ण किया।

14 नवम्बर 2024 को Pangwala Tribe in Contitnity and Change: An Athnographic Study विषय पर पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ से विद्या वाचस्पति की उपाधि प्राप्त की।

डॉ. हेमलता (संस्कृत विभाग) ने 13–14 अगस्त 2024 को राजकीय महाविद्यालय बंजार (कुल्लू) में आयोजित Identity, Culture, Development and Environment in the Himalayas: Challenges and Future Prospects, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "हिमाचल प्रदेश की भौगोलिक विविधता और सांस्कषतिक अनुकूलन" नामक विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

• वैश्विक संस्कृत मंच, गोरखपुर मंडल तथा दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक 21 से 27 नवम्बर 2024 को आयोजित 'पांडुलिपि विज्ञान : एक परिचय' विषय पर सात दिवसीय आभासी राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

11–12 फरवरी 2025 को Himalayan Council for Scientific Research और राजकीय महाविद्यालय सैंज के सहयोग से (HCSR) International Conference में 'स्थानीय मेलों के परिवर्तित होते स्वरुप' पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. विकास कुमार (संगीत विभाग) ने UGC-Malviya Mission Teacher Training Centre, University of Jammu से 25 नवम्बर से 7 दिसम्बर 2024 तक दो सप्ताह का पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (Refresher Course) पूर्ण किया।

• 13–14 अगस्त 2024 को राजकीय महाविद्यालय बंजार (कुल्लू) में आयोजित Identity, Culture, Development and Environment in the Himalayas: Challenges and Future Prospects,अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "Enlivening Symbol of Himalayan Cultural Heritage : Shaand Mahayagya" नामक विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

श्री टिक्कम राम (इतिहास विभाग) ने 20 से 26 जून तकHimalyan Council For Scientific Research (HCSR) तथा राजकीय महाविद्यालय सैंज के सहयोग से 7 दिवसीय Faculty Development Program (FDP) पूर्ण किया। 3 से 5 जून 2024 को ICFRE, Himalyan Forest Research Institute, Shimla, RGGDC Chora Maidan shimla, RKMV Shimla, GGC Hamirpur & COE Sanjouli द्वारा आयोजित "Issues and Advance in the Contemporary World"नामक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "The Remification of Tribal Culture: Fagul Festival Mask Dance in Kullu"विषय पर पत्र प्रस्तुत किया।

• 17 से 19 जून तक Himalyan Council For Scientific Research (HCSR) तथा राजकीय महाविद्यालय सैंज के सहयोग से आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में Visual hiz: Unveiling the Meanings Behind Images and Cuts नामक विषय पर पत्र

प्रस्तुत किया। 16 से 21 दिसम्बर 2024 तक सेंट बीड्स कॉलेज के IQAC Cell द्वारा आयोजित Enhancing Quality Assurance in Higher Education: Insights into NEP 2020 and NAACs Binary Accreditation Framework(FDP) में भाग लिया।

• 13–14 अगस्त 2024 को राजकीय महाविद्यालय बंजार (कुल्लू) में आयोजितIdentity, Culture, Development and Environment in the Himalayas: Challenges and Future Prospects, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में सह–संयोजक की भूमिका निभाई।

श्री विकास (गणित विभाग) ने 16 से 22 सितम्बर 2024 तक राजकीय महाविद्यालय आनी, कुल्लू और प्रतिभा सपन्दन सोसाइटी के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित "Digital Education: Future of Teaching-Learning (NEP-2020)" विषय पर सात दिवसीय आभासी कार्यशाला में भाग लिया।

डॉ. श्रवण कुमार (अर्थशास्त्र विभाग)24.05.2024 को बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर डॉ. श्रवन कुमार को माननीय राज्यपाल श्री शिव कुमार शुक्ल द्वारा सातवें 'भारत–तिब्बत मैत्री सम्मान' 2024 से सम्मानित किया गया।

डॉ. अनिल कुमार (गणित विभाग) ने 13–14 अगस्त 2024 को राजकीय महाविद्यालय बंजार (कुल्लू) में आयोजित Identity, Culture, Development and Environment in the Himalayas: Challenges and Future Prospects, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठि में "Mathematical modeling to study the climate changes in Himalyan Region"नामक विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

श्री हेमेन्द्र सिंह (भौतिक विज्ञान विभाग) ने 11 से 13 अक्टूबर 2024 को Himalayan Council for Scientific Research और राजकीय महाविद्यालय पांगी, चम्बा द्वारा आयोजित संगोष्ठी में संयोजक के रुप में कार्य किया।

कुमारी लता देवी (हिन्दी विभाग) ने13–14अगस्त 2024 को राजकीय महाविद्यालय बंजार (कुल्लू) में आयोजित Identity, Culture, Development and Environment in the Himalayas: Challenges and Future Prospects, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "हिमाचल प्रदेश में जलवायु परिवर्तन की गंभीरता"नामक विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

• वैश्विक संस्कष्त मंच, गोरखपुर मंडल तथा दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक 21 से 27 नवम्बर 2024 को आयोजित 'पांडुलिपि विज्ञान : एक परिचय' विषय पर सात दिवसीय आभासी राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

• 11–12 फरवरी 2025 को Himalayan Council for Scientific Research और राजकीय महाविद्यालय सैंज के सहयोग से (HCSR) International Conferenceमें 'स्थानीय मेलों के परिवर्तित होत स्वरुप' पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

श्री अंशुल शर्मा (संगीत विभाग) ने 13–14अगस्त 2024 को राजकीय महाविद्यालय बंजार (कुल्लू) में आयोजित Identity, Culture, Development and Environment in the Himalayas: Challenges and Future Prospects, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "हिमाचल प्रदेश की भौगोलिक विविधता और सांस्कृतिक अनुकूलन" नामक विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

• 11–12 फरवरी 2025 को Himalayan Council for Scientific Research और राजकीय महाविद्यालय सैंज के सहयोग से (HCSR) International Conferenceमें 'जलवायु परिवर्तन और इसका हिमाचल की लोक संस्कृति व लोकगीतों पर प्रभाव' पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

एन.सी.सी.

2020–21 में 39 कैडेट्स की ईकाई को स्वीकृति मिली। वर्तमान में 39 कैडेट्स का नामांकन हुआ है जिसमें 23 छात्र एवं 16 छात्राएं सम्मिलित है। इस वर्ष एन.सी.सी. अधिकारी प्रो0 टिक्कम राम के नेतृत्व में निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया।

''स्वयं और समाज के लिए योग'' थीम पर अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2024 को महाविद्यालय परिसर में मनाया गया, जिसमें महाविद्यालय के एन.सी.सी. कैडेट्स तथा इग्नू के लगभग 40 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। टून्ना (गोहर) चचयोट की आंगनबाड़ी कार्यकर्ता मीना कुमारी ने योग सत्र का नेतृत्व किया।कार्यक्रम में राजकीय महाविद्यालय थाची के प्राचार्य दीप कुमार, डॉ. योग राज और श्री टिक्कम

विश्व युवा कौशल दिवस (15.07.2024)

राजकीय महाविद्यालय बंजार के एन.सी.सी. कैडेटस ने विश्व युवा कौशल दिवस उत्साहपूर्वक मनाया। इस अवसर पर डॉ. हेमलता सम्मानित अतिथि रही। कार्यक्रम के दौरान भाषण प्रतियोगिता, पोस्टर मेकेंग और नारा लेखन जैसी रचनात्मक गतिविधियां आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में 18 कैडेटस ने भाग लिया और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर युवा कौशल विकास के महत्व को रेखांकित किया।

कारगिल विजय दिवस (26.07.2024) : वीर जवानों को श्रद्धांजलि

कारगिल विजय दिवस (26.07.2024) : वीर जवानों को श्रद्धांजलि कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्राचार्य डॉ. रेनुका थपलियाल और सेवानिवृत्त मेजर एम. एस. राठौर मुख्य वक्ता के रुप में उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता ने विद्यार्थियों के समक्ष कश्मीर के ऐतिहासिक परिदृश्य और कारगिल युद्ध की घटनाओं का विशद् वर्णन किया उन्होने भारतीय सेना और आई. एन. ए. में अपने कार्यों का उल्लेख करते हुए अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

15 अगस्त 2024 एन.सी.सी. कैडेटस ने मेला ग्रांउड में ब्लॉक स्तरीय स्वतन्त्रता दिवस परेड मे भाग लिया जिसका नेतृत्व सीनियर अंडर आफिसर नरेश ठाकुर ने किया।

''पौधारोपण''

28 अगस्त 2024 ''पौधारोपण'' : भूगोल विभाग व एन.सी.सी. कैडेटस द्वारा महाविद्यालय परिसर में श्री दीपक कुमार सिंह की अध्यक्षता में, देवदार, ओक आदि के पौधे, 'एक कैडेट एक पौधा' कार्यक्रम के अन्तर्गत लगाए गए। महाविद्यालय के विभिन्न क्लबों व एन.सी.सी. व ओ.एस.ए. द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन शहीद लाला जगत नारायण जी की याद में पंजाब केसरी के सहयोग से किया गया। इसमें 39 लोगों ने रक्तदान किया।

''स्वचछता की भागीदारी में भारतीय नदियां संस्कृति की जननी'' (24.09.2024)

एन.सी.सी. और रोवर्स एंड रेंजर्स के संयुक्त तत्वावधान में स्वच्छता की भागीदारी कार्यक्रम के अन्तर्गत River Bank Cleanliness drive का आयोजन किया गया। इसमें महाविद्यालय के निकट बहने वाली खाड़ागाड़ खड्ड के किनारे पड़े कचरे और प्लास्टिक को 39 एन.सी.सी. कैडेटस और 20 रेंजर्स और रोवर्स ने एकत्रित किया। 28 सितम्बर 2024 को सीनियर अंडर आफिसर नरेश ठाकुर और कैडेट समृतिका चौहान ने DCATC/RD कैंप सहभागिता में भाग लिया।

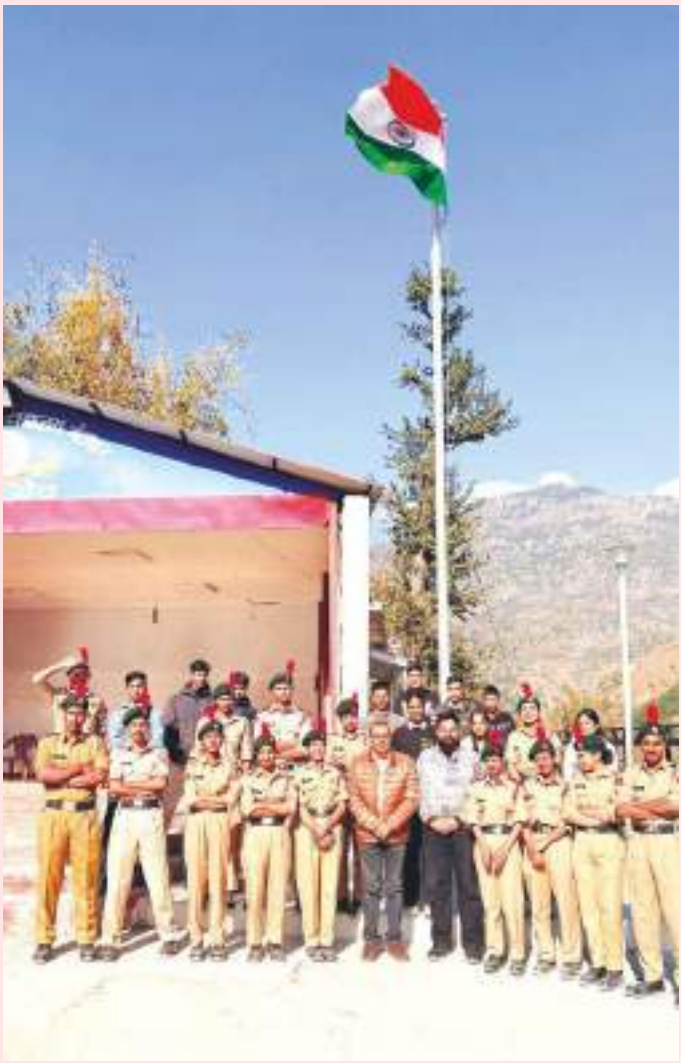

एन.सी.सी. यूनिट द्वारा ''स्वभाव स्वच्छता और संस्कार स्वच्छता'' विषय के अन्तर्गत पर्यावरण संरक्षण का अभियान चलाया गया जिसके अन्तर्गत पोस्टर और नारा लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसमें विद्यार्थियों ने स्वच्छता एवं जिम्मेदार आदतों को अपनाने के लिए अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. रेनुका थपलियाल ने Sustainable Developmentके महत्व को रेखांकित किया।

25 नवम्बर 2024 : एन.सी.सी. स्थापना दिवस समारोह

प्राचार्य डॉ. राजेश कुमार सिंह की अध्यक्षता में एन.सी.सी. स्थापना दिवस का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत विभिन्न रोचक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय प्राथमिक चिकित्सा दिवस

(14.09.2024)

एन.सी.सी. इकाई ने नागरिक अस्पताल बंजार के सहयोग से प्राथमिक चिकित्सा दिवस का आयोजन किया। इस अवसर पर डॉ. सचिन ने कैडेटस को अपातकालीन स्थिति में दिए जाने वाले प्राथमिक उपचार, सी.पी.आर., पल्स चैक और आदि प्राथमिक अपचार प्रक्रियाओं पर प्रकाश डाला।

कैम्प

9 से 18 दिसम्बर 2024 को 239 Transit Camp पंडोह में आयोजित ATC207 Camp में 25 Cadets (13SD & 12SW) ने भाग लिया। अंडर ऑफिसर टीनू देवी और कैडेट उज्जवल ने Annual Trainig Camp 207, 239 Transit Camp Pandoh में Quiz Competition में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कैडेट खुशबू और मनोज ठाकुर ने Annual Trainig Camp 207, 239 Transit Camp Pandoh में Debate Competition, Anchoring में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

18 दिसम्बर से 29 दिसम्बर 2024 तक पठानकोट में आयोजित राष्ट्रीय स्तर के आर्मी अटेचमेंट कैंप में कैडेट विकास कुमार ने भाग लिया। अंडर ऑफिसर टीनु देवी ने 5 जनवरी से 17 जनवरी तक धर्मशाला में आयोजित राष्ट्रीय स्तर के आर्मी अटैचमेंट कैंप में भाग लिया। इस दौरान कैडेटस ने हथियारों की पहचान और संचालन का प्रशिक्षण प्राप्त किया और एक इन्फैंटरी बटालियन की संरचना और भूमिका को समझा। उन्होने राईफल से फायरिंग का व्यवहारिक प्रशिक्षण भी लिया।इस सत्र में 8 कैडेटस ने CEE तथा 11 ने BEE परीक्षा पास की।

आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ

महाविद्यालय का आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ श्री दीपक कुमार सिंह जी के कुशल नेतृत्व में कार्य कर रहा है, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम करवाये गए।

– 04 अप्रैल 2024: कांगड़ा भूकम्प की स्मृति को मानाने के लिए मॉक ड्रिल का आयोजन।

– 16 सितम्बर 2024 : भूगोल प्रयोगशाला में मॉक ड्रिल का आयोजन।

– 24 अक्टूबर 2024 : आभासी माध्यम से Disaster Risk Reduction Day Celebration में भाग लिया।

राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.)

महाविद्यालय में डॉ. श्रवण कुमार के दिशा निर्देश में राष्ट्रीय सेवा योजना की पूर्ण इकाई कार्य कर रही है। इसका उद्देश्य छात्र वर्ग में सामुदायिक सेवा की भावना उत्पन्न कर उन के बहु–आयामी व्यक्तित्व का विकास करना है। इस वर्ष एन.एस.एस. की नवीन कार्यकारिणी का गठन 23 जुलाई 2024 को हुआ और इसमें कुल 110 स्वयंसेवी पंजीकृत हुए है, जिसमें 23 छात्र तथा 87 छात्राएं शामिल है। 03.09.2024 को प्राचार्य महोदय की अध्यक्षता में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की नई सलाहकार समीति का गठन किया गया जो इस प्रकार हैः–

श्री मान सिंह (ज़िला परिषद् सदस्य)
श्रीमती पूनम (खंड विकास समीति अध्यक्ष)
श्रीमती चन्द्रा देवी (प्रधान ग्राम पंचायत बलागाड़)
श्री गौरव शर्मा (अध्यक्ष सिराज वेंचर, गैर–सरकारी संस्था)
शिक्षक सदस्य– डॉ. हेमलता, श्री रामा नन्द, डॉ. विकास कुमार

महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई ने 26–07–2024 से 20–02–2025 तक कुल 136 कार्यक्रमों को My Bharat Poratal (MBP) के माध्यम से प्रदर्शित किया है। यह इकाई प्रदेश के कुछ चुनिंदा इकाइयों में से एक है जिसने MBP के माध्यम से अपनी गतिविधियों को देश भर में प्रदर्शित किया है।

सेवा, सद्भाव और सौहार्द के यादगार लम्हें...

स्वच्छ भारत मिस

JALORI

रोवर्स एंड रेंजर्स

राजकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय बंजार की रोवर्स एंड रेंजर्स ईकाई में रोवर लीडर श्री अंशुल शर्मा तथा रेंजर लीडर डॉ. हेमलता के नेतृत्व में 10 रोवर्स तथा 20 रेंजर्स पंजीकृत है। **सत्र 2024–25** में इस ईकाई द्वारा निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया गया।

रोवर्स एंड रेंजर्स, रैड रिबन क्लब,महिला प्रकोष्ठ और यूथ रैड क्रॉस द्वारा पंजाब केसरी के सहयोग से एक दिवसीय रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 39 छात्रों ने रक्तदान दिया। **21 सितम्बर 2024 को विश्व शांति दिवस** मनाया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। **18 अक्टूबर 2024 02** रेंजर्स तथा 03 रोवर्स ने प्रवेश परीक्षा पास की। **23 से 27 अक्टूबर 2024** को भारत स्काउट एंड गाईड के राज्य प्रशिक्षण केन्द्र रिवालसर में महाविद्यालय की 8 रेंजर्स ने निपुण परीक्षा पास की। **07 नवम्बर 2024** को भारत स्काउट एंड गाईड का 75वां स्थापना दिवस, मुख्य अतिथि प्राचार्य श्री राजेश कुमार सिंह की उपस्थिति में हर्षोल्लास से मनाया गया। **20 फरवरी 2025** को रोवर्स एंड इकाई के सात सदस्यों ने डॉ. हेमलात व श्री हेमेन्द्र के नेतृत्व में महाविद्यालय द्वारा गोद लिए गए पी.एम.श्री.जी.एम.सी. स्कूल बन्जार में विद्यार्थियों के साथ संवाद किया और उन्हे हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया **22 फरवरी 2025** को महाविद्यालय में डॉ. रेनुका थपलियाल की अध्यक्षता में विश्व स्काउट दिवस का आयोजन किया गया। **23 फरवरी 2025** को रोवर्स रेंजर्स इकाई द्वारा महाविद्यालय परिसर में 15 देवदार, 15 चुली और 05 अखरोट के पौधे डॉ. हेमलता और श्री अंशुल के नेतृत्व में लगाए गए।

रैड रिबन क्लब

9 अगस्त 2024 को दो छात्र योपिन्दर सिंह और नरेश ठाकुर ने क्षेत्रीय अस्पताल कुल्लू में आर. आर. सी. कार्यशाला में जी. सी. बन्जार के आर. आर. सी के पीयर एजुकेटर के रुप में भाग लिया। रैड रिबन क्लब और यूथ रैड क्रॉस द्वारा पंजाब केसरी के सहयोग से एक दिवसीय रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 39 छात्रों ने रक्तदान किया। रैड रिबन क्लब और स्कॉउटस एडं गाईड द्वारा एड्स जागरुकता अभियान का आयोजन किया गया।

निर्वाचन साक्षरता क्लब

निर्वाचन साक्षरता क्लब द्वारा 13से 26 नवम्बर 2024 तक 'बी.एल.ओ. हेल्प डेस्क' के सदस्यों की मतदाता सूचियों के निर्माण में सहायता की गई।

महिला प्रकोष्ठ

महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने एवं महिला सशक्तिकरण एवं बाल संरक्षण हेतु सत्र 2024–25 लिए महिला प्रकोष्ठ का गठन किया गया है। इसके संयोजिका डॉ॰ लीना वैद्या है। इस प्रकोष्ठ के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। **9 सितम्बर 2024** को महिला प्रकोष्ठ, रैड रिबन क्लब और यूथ रैड क्रॉस द्वारा पंजाब केसरी के सहयोग से एक दिवसीय **रक्तदान शिविर** का आयोजन किया गया जिसमें 39 छात्रों ने रक्तदान दिया। **27 सितम्बर 2024** को **स्वास्थ्य जागरुकता शिविर** का आयोजन प्राचार्य डॉ. रेनुका थपलियाल की अध्यक्षता में किया गया जिसमें नागरिक चिकित्सालय बंजार से डॉ. शिवांशु गौतम मुख्य वक्ता के रुप में उपस्थित रही। उन्होंने अपने संभाषण में स्वस्थ जीवन शैली, मधुमेह, हाईपरटैंशन और माहवारी, अल्कोहल और सिगरेट के दुष्प्रभाव जैसे मुददों पर विद्यार्थियों को जागरुक किया। **20 से 25 नवम्बर 2024** तक पांच दिवसीय Self Defence Workshop, in Collaboration with ICDS (Integrated Child Development Services) कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 100 छात्राओं ने भाग लिया।

8 मार्च 2025 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस, प्राचार्य श्री राजेश कुमार सिंह की अध्यक्षता में मनाया गया जिसमें श्रीमति अनीता नेगी मुख्य वक्ता के रुप में उपस्थित रही। उन्होने इस अवसर पर विद्यार्थियों को जैविक खेती के विषय में जानकारी दी और उन्हे इसे अपनाने के लिए जागरुक किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने स्किट, फैशन शो, कविता पाठ, एकल नृत्य और गायन तथा राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय व स्थानीय स्तर पर ख्याति हासिल करने वाली महिलाओं के विषय में एक Power Point Presentation दिया।

जीविकोपार्जन परामर्श एवं प्रस्थापन प्रकोष्ठ (Career Counseling and Placement Cell)

जीविकोपार्जन परामर्श एवं प्रस्थापन प्रकोष्ठ (Career Counseling and Placement Cell) दीपक कुमार सिंह के कुशल नेतृत्व में छात्रों को अपने भविष्य के प्रति जागरुक बनाने तथा रोज़गार के विभिन्न अवसर प्रदान करने एवं छात्रों को सुझाव देने के लिए नियमित रुप से कार्य कर रहा है। सत्र 2024–25 के दौरान उत्कृष्ट महाविद्यालय योजना के अन्तर्गत जीविकोपार्जन परामर्श प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों का वर्णन इस प्रकार है :–

क्रम संख्या	दिनांक	गतिविधि	लाभान्वित छात्र	विशेषज्ञ
1.	24 / 08 / 2024	भूगोल में स्नातक के बाद अवसर	41	श्री दीपक कुमार सिंह
2.	28 / 08 / 2024	कॉमर्स में उभरते हुए व्यवसाय	11	डॉ. डाबे राम
3.	29 / 08 / 2024	विज्ञान स्नातक करने के बाद अवसर	30	श्री अतुल चौधरी
4.	29 / 08 / 2024	पुरातत्व विज्ञान में नये मौके	125	श्री टिक्कम राम
5.	06 / 09 / 2024	विज्ञान स्नातक के बाद प्रतियोगिताओं के लिए तैयारी	34	श्री विकास नेगी
6.	17 / 09 / 2024	आजीविका के लिए हिन्दी विषय की उपयोगिता	122	सुश्री लता ठाकुर
7.	21 / 09 / 2024	संस्कृत भाषा और जीविकोपार्जन के अवसर	100	सुश्री हेमलता
8.	24 / 09 / 2024	अंग्रेजी भाषा और आजीविका विकल्प	40	डॉ. लीना वैद्य
9.	25 / 09 / 2024	प्रतियोगि परीक्षाओं की तैयारी कैसे करें।	60	श्री सुरेन्द्र ठाकुर
10.	30 / 09 / 2024	संगीत: आजीविका का सुअवसर	45	डॉ. विकास कुमार
11.	01 / 10 / 2024	मुख्यमंत्री स्टार्टअप प्रोजेक्टस	206	श्री राजन सहगल
12.	08 / 10 / 2024	होटल इंडस्ट्री की उपयोगिता	140	श्री राहुल भटट्
13.	12 / 10 / 2024	समाजशास्त्र की जीवन में उपयोगिता	36	श्री रामानन्द

सड़क सुरक्षा क्लब

इस महाविद्यालय में डॉ. विकास कुमार के कुशल नेतृत्व में ''सड़क सुरक्षा क्लब'' द्वारा विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। 07 सितम्बर 2024 को क्लब के सदस्यों को ट्रैफिक नियमों की जानकारी हेतू ट्रैफिक पार्क मौहल ले जाया गया जिसमें 45 विद्यार्थियों ने भाग लिया। 24 फरवरी 2025 को सड़क सुरक्षा क्लब द्वारा प्राचार्य श्री राजेश कुमार सिंह जी की अध्यक्षता में 'सड़क सुरक्षा जागरुकता' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें नारा लेखन, पोस्टर मेकिंग तथा भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गई तथा विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

युवा पर्यटन क्लब

केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार महाविद्यालय में सितम्बर 2023 में पर्यटन क्लब की स्थापना की गई। इस क्लब में श्री रामानंद जी को संयोजक, डॉ. श्रवण कुमार व डॉ. विकास कुमार को पर्यटन क्लब बंजार का सदस्य मनोनीत किया गया।

23 अगस्त 2024 को पर्यटन क्लब के संयोजक की अध्यक्षता मे एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें हंस फॉउन्डेशन के खंड समन्वयक श्री निशान्त द्वारा पर्यावरण जागरुकता विषय पर छात्रों को संबोधित किया गया।

6 दिसम्बर 2024 को क्लब के सदस्यों ने वनों में आगजनी की घटनाओं को रोकने संबधित जागरुकता का प्रसार करने हेतु 'हिमालयन इको टूरिज़म' के सौजन्य से संबधित विषय में चित्रों को महाविद्यालय परिसर में लगाया। इसमें कुल 10 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया।

खेल–कूद गतिविधियां

शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग के डॉ. प्रवेश शर्मा के कुशल मार्गदर्शन में महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने पूरे सत्र के दौरान 12 अंतर महाविद्यालय खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।मण्डी के वल्लभ राजकीय महाविद्यालय में दिसम्बर माह में आयोजित हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय की अंतर महाविद्यालय वुशु प्रतियोगिता में बी.ए. तृतीय वर्ष के झाबे राम ने 60 कि.ग्रा. भार वर्ग में रजत पदक तथा बी.ए. द्वितीय वर्ष के मनोज कुम ने 52 कि. ग्रा. भार वर्ग में रजत पदक प्राप्त कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया। इसके अतिरिक्त इसी प्रतियोगिता में बी.ए. अंतिम वर्ष के छात्र प्रवीन कुमार ने 56 कि.ग्रा. भार वर्ग में कांस्य पदक प्राप्त किया।

महाविद्यालय की महिला एवं पुरुष टीमों ने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के तत्वावधान में राजकीय महाविद्यालय हरिपुर,

मनाली में सितम्बर माह में आयोजित हुई अन्तर महाविद्यालय क्रॉस कन्ट्री प्रतियोगिता में भाग लिया। अक्टूबर माह में महाविद्यालय की पुरुष शतरंज टीम ने राजकीय महाविद्यालय

सुजानपुर में भाग लेकर 42 महाविद्यालयों में 11वां स्थान हासिल किया।

महाविद्यालय की महिला टेबल टैनिस टीम ने शिमला के सेंट बीड्स महाविद्यालय में आयोजित टेबल टैनिस प्रतियोगिता में भाग लेकर बेहतरीन प्रदर्शन किया। अक्टूबर माह में लक्ष्मण सेन मेमोरियल

महाविद्यालय सुन्दरनगर में आयोजित अन्तर महाविद्यालय पुरुष क्रिकेट प्रतियोगिता में महाविद्यालय की टीम ने भाग लिया। हमीरपुर ज़िला के राजकीय महाविद्यालय में आयोजित हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय एथलेटिक मीट में भी महाविद्यालय के खिलाड़ियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त राजकीय महाविद्यालय

जुखाला, भोरंज और सीमा, रोहड़ू में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं

में भी महाविद्यालय के विद्यार्थियों की भागीदारी रही। 21 फरवरी 2025 को महाविद्यालय में **वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 150 छात्र छात्राओं ने एथलेटिक्स की विभिन्न स्पर्धाओं में भाग लिया। इस दौरान विकास कुमार बी.ए. द्वितीय वर्ष और रजनी ठाकुर बी.ए. द्वितीय वर्ष ने क्रमशः पुरुष व महिला वर्ग में सर्वश्रेष्ठ एथलीट का खिताब जीता।

हिंदी विभाग

14 सितम्बर 2024 को हिन्दी विभाग की प्रभारी कुमारी लता देवी की उपस्थिति में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया जिसके तहत विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे भाषण, दोहा गायन, कविता पाठ, निबन्ध लेखन, काव्य पाठ, सुलेख, नारा लेखन और चित्रकला, प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इस अवसर पर महाविद्यालय बंजार के लगभग 250 छात्र एवं छात्राएं सभागार में उपस्थित रहे जिनमें से

54 छात्र छात्राओं ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। 17 सितम्बर 2024 को हिन्दी विभाग के विद्यार्थियों के लिए, हिन्दी विभाग और जीविकोपार्जन परामर्श एवं प्रस्थापन प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वाधान में करियर विकल्प के बारे में डॉ. रेणुका थपलियाल की अध्यक्षता में चर्चा की गई।

29 नवम्बर 2024 को प्रारुपण और टिप्पण पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें श्री चंद्र कांत, अधीक्षक, रा0 म0 बंजार ने विद्यार्थियों को सरकारी दस्तावेज़ों की तैयारी, औपचारिक लेखन व प्रशासनिक लेखन की प्रक्रिया पर व्याख्यान दिया।

संस्कृत विभाग

14 अगस्त 2024 को देव सदन कुल्लू में ज़िला संस्कृत परिषद् कुल्लू द्वारा संस्कृत दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में विभाग के 7 विद्यार्थियों ने भाग लिया जिसमें महाविद्यालय की छात्रा किरना ने गीता पाठ में प्रथम स्थान हासिल कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया।

संविधान दिवस

महाविद्यालय के राजनीति शास्त्र व लोक प्रशासन विभाग द्वारा संयुक्त रुप से संविधान दिवस के उपलक्ष्य पर 26 नवम्बर 2024 को प्राचार्य की उपस्थिति में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें भाषण प्रतियोगिता, पोस्टर मेकिंग तथा नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

विश्व मानवाधिकार दिवस

राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा विश्व मानवाधिकार दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें प्रश्नोतरी, भाषण, पोस्टर मेकिंग, नारा लेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

इतिहास विभाग

कारगिल विजय दिवस (26.07.2024) : वीर जवानों को श्रद्धान्जलि : इतिहास विभाग व एन.सी.सी. द्वारा कारगिल विजय दिवस संयुक्त रुप से मनाया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्राचार्य डॉ. रेनुका थपलियाल और सेवा निवृत मेजर एम. एस. राठौर मुख्य वक्ता के रुप में उपस्थित रहे।

मुख्य वक्ता ने विद्यार्थियों के समक्ष कश्मीर के ऐतिहासिक परिदृश्य और कारगिल युद्ध की घटनाओं का विशुद् वर्णन किया उन्होंने भारतीय सेना और आई. एन. ए. में अपने कार्यों का उल्लेख करते हुए अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। 31 अगस्त 2024 को महाविद्यालय में इतिहास के विद्यार्थियों के लिए 'करियर के अवसर' पर व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. रेनुका थपलियाल की अध्यक्षता में प्रो. टीक्कम राम ने इतिहास विषय में करियर विकल्पों के बारे में विद्यार्थियों को अवगत करवाया। इसमें कुल 171 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इतिहास विभाग द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय पुरातत्व दिवस, डॉ. रेनुका थपलियाल की अध्यक्षता में हर्षोल्लास से मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

अंग्रेज़ी विभाग व साहित्यिक परिषद्

8 अगस्त 2024 को तृतीय वर्ष अंग्रेज़ी मेजर के विद्यार्थियों के लिए Mock Interview Sessionआयोजित किए गए। **27 से 29 अगस्त 2024** : Power Point Presentation and Interactive Session, तृतीय वर्ष अंग्रेज़ी मेजर के विद्यार्थियों के लिए आयोजित किए गए जिसमें 23 बच्चों ने भाग लिया। **07 सितम्बर 2024** को अंग्रेज़ी विभाग और साहित्यिक परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में अंग्रेज़ी में Short Story Competition का आयोजन किया गया जिसमें 32 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में डॉ. उरसेम लता, प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय पनारसा और श्री ईशान मार्वल, सहायक प्रवक्ता राजकीय महाविद्यालय हरिपुर ने निर्णायकमण्डल की भूमिका निभाई। **14 सितम्बर 2024** को हिन्दी विभाग और साहित्यिक परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी दिवस और अन्तर्राष्ट्रीय प्राथमिक चिकित्सा दिवस का आयोजन किया गय जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। अंग्रेज़ी विभाग द्वारा **19 सितम्बर 2024** को द्वितीय वर्ष के छात्र छात्राओं के लिए Translation Studies पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी, जिसमें डॉ. हेम लता तथा कुमारी लता ने संबधित विषय पर वक्तव्य प्रस्तुत किए।

24 सितम्बर 2024 को अंग्रेज़ी विभाग और CC & PC राजकीय महाविद्यालय बंजार के संयुक्त तत्वावधान में अंग्रेज़ी मेजर के विद्यार्थियों के लिए Career Options After BA Major English पर एक वक्तव्य का आयोजन, डॉ. रेनुका थपलियाल की अध्यक्षता में किया गया जिसमें डॉ. लीना वैद्या ने Education Sector, Media and Journlism, Editing and Publishing, Corporate Communication and Content Writing जैसे विषयों में Career Options पर बात की। **28 सितम्बर 2024** को Graphic Cartoons: Reading and Analysis पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन अंग्रेज़ी विभाग के विद्यार्थियों के लिए किया गया। **अक्टूबर 2024** में प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा महाविद्यालय परिसर व इसके बाहर विभिन्न विशिष्ठ व्यक्तियों का साक्षात्कार लिया गया। इस कार्य का उदेश्य विद्यार्थियों को Interview skills such as verbal, non-verbal skills, etiquettes and courtesy से परिचित करवाना था। **26 अक्टूबर 2024** को अंग्रेज़ी विभाग के विद्यार्थियों द्वारा महाविद्यालय परिसर में Kitchen Garden का निर्माण किया गया तथा विभिन्न प्रकार की सब्जियां लगाई गई। **7 और 8 नवम्बर 2024** को तृतीय वर्ष अंग्रेज़ी के विद्याार्थियों के लिए Group Discussion पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

9 नवम्बर 2024 को महाविद्यालय के 20 छात्र–छात्राओं के 8 शोध पत्र हिमतरु पब्लिकेशन के विशेष संस्करण ''समृतियों

में कुल्लू दशहरा''में प्रकाशित हुए जिसका ISSN2349-3054 है।

23 नवम्बर 2024 को महाविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के विद्यार्थियों को युवा महोत्सव ग्रुप–4 में ले जाया गया ताकि उन्हे वहां पर होने वाले कार्यक्रमों से परिचित करवाया जा सके जिसका मुख्यउदेश्य विद्यार्थियों को 'मूक अभिनय के माध्यम से अभिव्यक्ति' विषय में परिचित करवाना था। **5 दिसम्बर 2024** को अंग्रेज़ी विभाग ने प्रथम और द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों के लिए Flipped Classroom सत्र का आयोजन किया।

जैव विविधता (Biodiversity) क्लब

05 दिसम्बर 2024 को महाविद्यालय में Conservetor of forests, Kullu के दिशा निर्देशानुसार जैव विविधता क्लब का गठन किया गया जिसके नोडल हैड डॉ. लीना वैद्या तथा डॉ. विकास कुमार चुने गए। इस क्लब का मुख्य उदेश्य विद्यार्थियों को वन संरक्षण, पौधों, जानवरों और सूक्ष्म जीवों की विविधता और उसके संरक्षण से परिचित करवाना है। **07 फरवरी 2025** को महाविद्यालय में ''ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क में जैव विविधता संरक्षण जागरुकता'' विषय पर अन्तर महाविद्यालयी संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के 25 विभिन्न विषयों के शिक्षकों तथा 20 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता पी. जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय दिल्ली के राजीनति विज्ञान विभाग के प्रो. अभय सिंह ने की और सिराज के वन मण्डल अधिकारी श्री मनोज मुख्य अतिथि रहे। इस अवसर पर राजकीय महाविद्यालय बंजार तथा राजनिति विज्ञान विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय दिल्ली के मध्य जैव विविधता संरक्षण के लिए भविष्य में भी सहयोग के लिए सहमति बनी है।

शैक्षणिक यात्राएं

2 अक्टूबर 2024 को इतिहास विभाग के 45 विद्यार्थी एक दिवसीय शैक्षणिक यात्रा पर श्री टिक्कम राम जी के नेतृत्व में शिमला भ्रमण पर गए। इस यात्रा का उदेश्य विद्यार्थियों को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और वास्तु शास्त्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण विरासत से रु–ब–रु करवाना था। **31 जनवरी से 03 फरवरी 2025** तक चार दिवसीय शैक्षणिक यात्रा पर महाविद्यालय के विभिन्न विभागों के 40 विद्यार्थी,

डॉ. डाबे राम और डॉ. अनिल कुमार के नेतृत्व में दिल्ली के प्रगति मैदान में चल रहे Book Fair का हिस्सा बने। इसका उदेश्य विद्यार्थियों के मन में विभिन्न पुस्तकों के प्रति रुचि बढ़ाना और पुस्तकों की दुनिया का एक अलग अनुभव करवाना था। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों ने राष्ट्रपति भवन, राजघाट, इंडियागेट और लालकिला जैसे ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा की। बंजार क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए यह एक अनूठा अनुभव था। **25 से 28 फरवरी 2025** तक तीन दिवसीय शैक्षणिक यात्रा पर महाविद्यालय के भूगोल, राजनीति विज्ञान तथा लोक प्रशासन विभाग के 35 विद्यार्थियों ने डॉ. रेनुका थपलियाल, डॉ. योग और डॉ. सुरेन्द्र के नेतृत्व में स्वर्ण मन्दिर अमृतसर, सांईस सिटी, कपूरथला, अटारी बॉर्डर और जालंधर में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनितिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों का भ्रमण किया और कई महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल की। इस यात्रा का उदेश्य विद्यार्थियों को बाहरी दुनिया और सांस्कृतिक विरासत से अवगत करवाना था।

मध्यावधि परीक्षाएं

विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ाने तथा गुणवता युक्त शिक्षा प्रदान करने के लिए सरदार पटेल विश्वविद्यालय ने आंतरिक मूल्यांकन अंक पद्धति का तरीका अपनाया है। इस महाविद्यालय में परीक्षा नियंत्रक डॉ. योगराज के कुशल नेतष्त्व में प्रत्येक विषय में परीक्षा ली जाती है तथा विद्यार्थियों के द्वारा प्राप्त अंक, उपस्थिति तथा कक्षा परीक्षा में प्राप्त अंको के आधार पर आंतरिक मूल्यांकन किया जाता है।

स्वच्छता अभियान

''स्वच्छ भारत अभियान'' के उदेश्य को साकार करने एवं विद्यार्थियों को पर्यावरण एवं कार्य स्थल की स्वच्छता के महत्व को साकार करने के लिए महाविद्यालय परिसर एवं भवन में नियमित रुप से एन.सी.सी., एन.एस.एस. रोवर्स एंड रेंजर्स एवम् अन्य विद्यार्थियों द्वारा प्राध यापकों की देख रेख में क्रमावर्तन (Rotation) में सफाई की जाती है।

सिराज उत्सव की झलकियां

सिराज उत्सव की झलकियां

Pride of Our College

Mamta (1st; BCom IIIyr)

Sujata(2nd; BCom IIIyr)

Kanish Rana(3rd; BCom IIIyr)

Khila Devi (1st; BA IIIyr)

Kalpana Kumari (2nd;BA IIIyr)

Kishan Kumar (3rd;BA IIIyr)

Chand Kishore (1st;BSc IIIyr)

Sapna Devi (2nd;BSc IIIyr)

Manisha(3rd; BScIIIyr)

The Award Winners

... and the tradition continues

... and the tradition continues

Editorial Board (Students)

Kanika (English)

Lancy (Hindi)

Bhanupriya (Pahadi)

Payal (Sanskrit)

Meera Yadav (Commerce)

Leena Devi (Science)

From the Editors of English, Science and Commerce Section

I feel truly grateful for the chance to serve as the Student Editor of our college magazine, Seraj Shikha. This journey has been full of learning, creativity, and teamwork. It has helped me grow in many ways,and I feel honored to have played a role in bringing it to life.This magazine is a reflection of the talent, passion, and unique voices of our college community. Every article you read here is an original piece, carefully written by the students of our college.

Their thoughts, ideas, and creativity shine through each page.

I would like to thank our respected faculty members and the editorial board for their constant support, trust, and guidance throughout this journey. A special thanks to myteam of junior editorsAkshita (B.A. 2nd Year), Radhika (B.A. 2nd Year) and Yamuna (B.A. 2nd Year), for their hard work and dedication. Their enthusiasm and fresh perspectives have made this experience truly enriching.Seraj Shikha is the result of many efforts coming together, and I hope it inspires and resonates with our readers.

Kanika (English)
Leena Devi (Science)
Meera Yadav (Commerce)

पहाड़ी अनुभाग

संपादकै री कलमा संगे

फेर–फिरदी सा उछठी–निहठी धारा,
देय शृंषी ऋशि री राईता
बजरा सा कॉलेज म्हारा,
सीडा–घीउ, बड़े–बाबरू, हिमाचली धाम, जबुा री डाली सा संस्कृति री पहचान ।
दूरा–दूरा देशा का इंदा लोका हेरदे प्यारी जिभी म्हारी।
सभी भाई–बहन जासु आपणे विचार पहाड़ी भाषा में लिखे तिहा बे मेरी शुभकामनाएं।
जैया भी पहाड़ी में आपणी संस्कृति री पहचान दीनी तैया सभी वे मेरा दिला का प्रणाम और कॉलेजा री तरफा का धन्यवाद।

भानु प्रिया

संस्कृत अनुभाग

सम्पादकीयम्

सर्वप्रथमोऽहं राजकीय महाविद्यालय बन्जारस्य वार्षिक पत्रिका ''सिराज शिखा'' इति नामधेयाः पाठकानां हार्दिक अभिनन्दनं करोमि। महाविद्यालस्य वार्षिक पत्रिका तया सह उत्साहेन सम्बद्धानां विभिन्नां जनानां सामूहिकप्रयत्नस्य परिश्रमस्य च परिणामः अस्ति। अहं गर्वेण घोषयामि यत् अस्माकं महाविद्यालये बहुमुखीप्रतिभायाः सम्पन्नाः छात्राः सन्ति। येषां कथा–काव्य, रुपेण, श्लोकः स्वविचारं प्रकटीकरणस्य कुशाग्रता वर्तते। यह आत्मानं गौरवमनुभवामि। यत् महाविद्यालयस्य पत्रिका ''सिराज शिखा'' संस्तस्य विभागस्य छात्रा सम्पादिकारूपे अहं कार्य करोमि इति मम सौभाग्यम्। लेखनकाले यदि अहं किमपि त्रुटिं करोमि तर्हि अहं भवन्तः क्षमा प्रार्थी।

पायल

हिन्दी अनुभाग

संपादकीय

प्रिय साथियों,

नमस्कार

सर्वप्रथम मैं हिंदी अनुभाग की छात्रा संपादिका होने के नाते राजकीय महाविद्यालय बंजार की वार्षिक पत्रिका 'सिराज शिखा' के इस अभिनव अंक में सभी पाठकों का अभिनन्दन करती हूँ। हमारे लिए यह हर्ष का विषय है कि हमारे महाविद्यालय द्वारा वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है।

'सिराज शिखा' पत्रिका छात्रों की लेखन प्रतिभा को उजागर करने के लिए वह सुनहरा अवसर प्रदान करती है, जिसकी तलाश सभी को रहती है। इस पत्रिका के माध्यम से हमारे युवाओं की सोच तथा उनकी बौद्धिक क्षमता का प्रारूप हमारे सामने प्रकट हो जाता है।

मैं एक छात्रा संपादिका होने के रूप में यह संदेश देना चाहती हूँ कि जीवन में चाहे कितनी भी बाधाएं क्यों न आ जाए हमें यह स्मरण रहना चाहिये की हर कठिनाई का समाधान भी उसमें ही छिपा रहता है। अतः हमें चाहिए कि हम निराशा को अपने जीवन में स्थान ना दें तथा उत्साह के साथ जीवन का आनन्द लें।

मैं हिंदी अनुभाग की प्रध्यापिका लता ठाकुर जी का बेहद धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने मुझे छात्रा संपादिका बनने का सुअवसर प्रदान किया। अंत में मैं धन्यवाद करती हूँ उस महत्तवपूर्ण कड़ी का जिसके बिना पत्रिका का सफल प्रकाशन संभव नहीं हो सकता, मैं धन्यवाद करती हूँ हर उस छात्र–छात्रा का जिन्होंने अपने भीतर के अमूल्य भावों से हमें अवगत कराया तथा इस पत्रिका के लिए अपने लेख दिये। हर एक लेख अपने आप में अनोखा है तथा पाठकों में नई चेतना जागृत करने में सक्षम है।

लैंसी शर्मा

विविध :

कविताएं, कहानियां, आलेख, लोक-कथाएं

आशा

निराशा के विपरीत है आशा,
दुःख में सुखद एहसास है आशा,
अंतर्मन के इस शोर में,
शांति का एक पल है आशा,
घोर किसी अंधकार में,
प्रकाश की पहली किरण है आशा,
नीरस जीवन में रस भर दे,
ऐसा ही एक भाव है आशा,
शून्य से अनंत पहुँचा दे,
सुनहरा कोई स्वप्न है आशा,
उत्साहित जीवन का आधार है आशा,
हृदय में यदि होगी आशा,
मीलों दूर रहेगी सदा निराशा।

लैंसी शर्मा
कला स्नातक, तृतीय वर्ष

नारी सशक्तिकरण

कोई विचार नहीं, यह तो एक आंदोलन है,
आंदोलन हर उस महिला का,
जिसने अधिकारों को अपने खोया था।

सशक्त हो रही है अब ये नारी,
विपदाओं के समक्ष जो कभी ना हारी।
उसने देखी पर्दा प्रथा, हर जुल्म को उसने झेला था।

पुरुष प्रधान समाज ने स्वाभिमान को उसने छीना था,
परन्तु कब तक यह सब सहती नारी,
तो उसने संघर्ष किया, भीतर छिपी ज्वाला से,
नारी शक्ति का निर्माण किया।

शिक्षा, विज्ञान चाहे क्षेत्र हो वह राजनीति का,
हर विषय में उसने परिचय दिया है कीर्ति का,
नारी अमूल्य है फिर भी उसका मूल्य लगा,
महिलाओं के सम्मान पर कई दफा कलंक लगा।

आओ महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दें,
एक नारी परिवार का ही नहीं,
समाज का भी आधार है,
उसके सशक्त होने से मानव सभ्यता यह साकार है।

लैन्सी शर्मा
कला स्नातक, तृतीय वर्ष

हिंदी

क्या है हिन्दी?

हिंदी मात्र एक भाषा नहीं, हमारे भावों की अभिव्यक्ति है,
भारतीयों को एकता में पिरोती, यह अनुपम शक्ति है।

हमारी संस्कृति और धर्म का प्रतीक है हिंदी,
इतिहास की गाथा हिंदी, हम सब की आशा हिंदी,
विचारों का सार हिन्दी, जीवन का आधार हिन्दी।

राष्ट्रीयता का भाव जगाती हिन्दी,
एक अलग सा उत्साह भर जाती हिन्दी।।

यूँ तो भाषाएँ हैं सभी प्यारी, किन्तु मातृभाषा की बात न्यारी,
ज्ञान का भण्डार हिन्दी, देश का गौरवगान हिन्दी।
जब इतनी है महान हिन्दी, तो क्यूं पिछड़ती जा रही है हिंदी?

आओ हिंदी का सत्कार करें, इसके विकास का हम प्रयास करें।
निरंतर इसे अपनाएं हम, तर्क हिन्दी में रखते हुए ना घबराएं हम।

तो गर्व से कहिये–
हिंदी है हम, हमारी यह पहचान है,
वतन भी देखो हमारा प्यारा हिन्दुस्तान है।

लैन्सी शर्मा
कला स्नातक, तृतीय वर्ष

बन्जार कॉलेज हमारा जान से प्यारा

सितारों की तरह चमकता रहे ये बन्जार कॉलेज हमारा,
फूलों की तरह महकता रहे ये अरमान हमारा।

हम अंश है इसके ये शरीर हमारा ,
ये है हमें दिलो जान से प्यारा।

आए हैं हम नई उमंगों और शाखाओं के संग
किसी को खुशी मिले और किसी को गम,
और कोई बन गया नंबर वन।

सौभाग्य है हमारा जो हम इस कॉलेज में आए,
हमने यहां योग्य आचार्य हैं पाए।

यही है अभिमान हमारा और हमारी शान,
करेंगे नाम रोशन इसका, यही है हमारा अरमान।

कृष्ण कुमार,
कला स्नातक, प्रथम वर्ष

सराज का श्रृंगार

सराज धरा का मुकुट सजा है, बर्फीली चादर ओढ़े,
हरियाली की चुनर लहराए, नभ से बातें जोड़े।

बाली चौकी स्कूल, औट की घाटियाँ, बंजार की वो राहें,
गोहर, थूनाग, बगस्याड की बिखरी सुंदर बाहें।

खणी की सरिता गूँज रही है, थाची की है शान,
पंजाई की माटी महकती, जंजैहली की जान।

शैटाधार पर बादल झूमें, चूंजवालागढ़ की शान,
जहाँ विराजे शिव स्वरूप, देते वर्षा का वरदान।

शारटी की पगडंडी चूमे, जहाँ देवता मुस्काए,
सपहणीधार की हवाएँ गाएँ, देवधार–सुनारू जगमगाए।

सराज का श्रृंगार निराला, प्रकृति का अनुपम एहसास,
धरती पर ये स्वर्ग समान है, देवों का यह पावन वास।

विकास, कला स्नातक, प्रथम वर्ष

प्रवाह के संग

कोई पागल कहेगा
तो कहने दो तुम मुझे रोको न
इस प्रवाह संग बहने दो
मुझे मुझ संग रहने दो
मेरी मुस्कान के लिए
तुमने जो इतने उधार लिए
मैं वो नहीं
तुमने जो देखा
मैं माटी तुमने आकाश सेका
मुझे इस हाल पर छोड दो
तुम अपनी राहों को मोड़ दो
मुझे बहना है
खुद के संग रहना है।
कुछ न किसी को कहना है
कोई पागल कहेगा
तो कहने दो
तुम मुझे रोको ना
इस प्रवाह संग बहने दो।

भानू प्रिया, कला स्नातक, तृतीय वर्ष

मेरे घर वाले

सब अपने हैं
सबके सपने हैं
कितनो के सेके
कितनो के उड़ाए
ये पराए नहीं मेरे अपने हैं
डरना भी यही
बढ़ना भी यही,
कड़वाहट भी यही
खुशबू भी यही,
कुछ खिल रहे
कुछ खिलने वाले हैं
ये फूलों की तरह हंस कर महकने वाले हैं
इस दुनिया के भीतर
एक छोटी सी दुनिया बनाने वाले मतवाले हैं।
कभी हाथ पकड़कर,
तो कभी आंखे दिखाकर
मेरे सफर के कांटो को
मुझसे पहले मिटाने वाले है
ये कोई और नहीं मेरे घर वाले हैं।

भानू प्रिया, कला स्नातक, अंतिम वर्ष

चाय

अखिल चूल्हों पर उबलती,
अखिल स्थानों पर महकती ,
असंख्य बार, मात्र चाय नहीं ,
एहसास बन चुका है।
एक घूंट चाय का मैंने पिया ,
सकल घूंट इसने मेरे पिए।
मुझको सुना, मुझमें मिली ,
मेरी अनकही बातों की सोहबत की।
स्वर्ण पात्रों पर, या टूटे ठिकरों पर ,
सबको सहलाती हैं ,
ये चाय मुझे मेरी हैसियत नहीं बताती है।

भानू प्रिया, कला स्नातक, तृतीय वर्ष

प्रकृति और मनुष्य

कितनी सुंदर कितनी प्यारी,
है नन्ही सी प्रकृति हमारी।
नदी, वन, बगीचे हैं इसकी शोभा,
फिर भी करता है मनुष्य इससे धोखा
हवा से होता है जीवन प्रदान ,
फिर भी मनुष्य कर रहा है इसका अपमान।
जो करे प्रकृति का सम्मान ,
प्रकृति रखे उसका मान।
प्रकृति में है मूल्य अनेक ,
जिससे बने मनुष्य का जीवन विवेक।
संसार घूमे इस प्रकृति के सहारे,
तो हम क्यों इसका अपमान है करें।
करें प्रकृति का सम्मान,
इससे ही होगा मनुष्य जीवन का निर्माण।

रितिका, कला स्नातक, तृतीय वर्ष

पेड़ और मनुष्य

पेड़ है हम सब का जीवन दाता,
फिर क्यों है इसका अपमान होता?
हे इंसान! मत काट तू पेड़,
रहेगी चारों ओर हरियाली,
बनेगी जीवन में तेरे खुशहाली।
मत काट तू जंगल,
इससे ही बनेगा तेरा जीवन मंगल।
हे इंसान! मत बन तू हैवान,
इससे होगा तेरा ही नुकसान।
पेड़ रोते हैं, चिल्लाते हैं, आंसू बहाते हैं,
पर तू बड़े चाव से उन्हें काटता है,
हे इंसान! मत कर तू अपनी हदों को पार,
नहीं तो खुलेगा तेरा मृत्यु का दरबार।
मत कर अपनी मनमानी,
नहीं तो संपन्न होगी तेरी कहानी।
पेड़ है हम सबका जीवन दाता,
फिर भी है इसका अपमान होता ।

रितिका, कला स्नातक, तृतीय वर्ष

आशियाने की तलाश

काट लाया में वो पेड़ ,
अपना आशियाना बनाने को ,
जिस पेड़ पर किसी बेजुबान का आशियाना था।
एहसास इस बात का मुझे तब हुआ ,
जब उस बेजुबान पक्षी ने मेरे घर के छत पर,
उसी जगह फिर अपना घर बनाया ,
जहां उस पेड़ की कटी लकड़ी लगी थीं।
अनगिनत आशियाने उजाड़ दिए हमने ,
बनाने को अपने आशियाने ,
आओ एक पहल ये भी करते हैं ,

बनाते हैं कुछ आशियाने उनके लिए ,
उजाड़े हैं जिनके आशियाने ,
अपना आशियाना बनाने के लिए ,
आओ लौटाए पेड़ लगाकर ,
उन बेजुबानों को उनके आशियाने ।

अंजली राणा, कला स्नातक, तृतीय वर्ष

रक्त

ये केवल मेरी नहीं, हर नारी की गाथा है,
दर्द से सजी, पर संघर्ष की परिभाषा है।
हर मास बहता, फिर भी मौन सहता,
न कोई प्रश्न, न कोई अधिकार कहता।
अपवित्र!" – यह ठप्पा समाज लगाता है,
जो जननी का स्त्रोत, वही कलंक कहलाता है।
कभी देवालय की देहरी रोके, कभी रसोई
रीतियों के नाम पर जंजीरें डाले।
पर यह रक्त सिर्फ़ वेदना नहीं,
सृजन की पहचान
इसी से अंकुर फूटे, इसी से जीवन महान है।
न यह कलंक, न कोई अभिशाप,
यह तो प्रकृति का दिया अनुपम वरदान है।
नौ मास नहीं, हर मास यह परीक्षा सहती है,
अपने ही रक्त से नयी कोपलें गढ़ती है।
फिर भी उपेक्षा, फिर भी लज्जा,
क्या सृष्टि की जननी के लिए यही न्याय है– 2
अब समय है मिथक मिटाने का–
जागृति की ज्योत जलाने का ,
जो सृजन की देवी है, उसे गरिमा दिलाने का।
यह रक्त अशुद्ध नहीं, यह शक्ति का प्रमाण है,
हर नारी के लहू में ही बसा नवजीवन का अभिमान है –
अंजली राणा, कला स्नातक, तृतीय वर्ष

नारी

सिंधु वासियों ने पूजा जिसे,
वेदों की वह जननी
शतपथ ब्राह्मण में कहा जिसे अर्धांगिनी

समर्पित जिसे मंत्र गायत्री
संपत्ति को जिसने त्यागा
वही विदुषी थी मैत्री
शास्त्रों की वह ज्ञाता
अपला, घोषा, लोपमुद्रा
सभ्यताओं का सृजन इसी नारी से हुआ
धरती से उत्पन्न हुई
सोने की लंका को ठुकराने वाली
रूखी सूखी रोटी खाने वाली
अग्नि परीक्षा के बाद
फिर धरती में समाने वाली

जननी वह जगदंबा है,
अग्नि से उत्पन्न हुई तोला जिसे पासे से,
वह समाज तो अंधा है

संभाली सल्तनत वह रजिया थी
वतन–ए–हिंद की पहली महिला शासिका बनी
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी
शहीद हुई वतन के वास्ते
फिरंगियों से रणभूमि में लड़ने वाली वह नारी अकेली थी

आसमान से आगे जहाँ कोई नहीं,
पहुँची गगन में कल्पना थी।
उसके बाद एक और सितारा,
सुनीता ने खोजा नया सवेरा।
इंदिरा की गूंज से हिली थी दुनिया,
शेरनी की हुंकार थी वो।
पर इससे पहले एक और दीप जला,
सरोजिनी की आवाज थी वो।
सुबह से शाम वह थकती नहीं है,
सब पक जाता उस रसोई में,
लेकिन वह कभी पकती नहीं हैं।
बहन बेटी कितने किरदार निभाती है
सब कुछ याद रख लेती है लेकिन खुद को भूल जाती है

स्त्री शाम स्त्री सवेरा
न स्त्री जितना गहरा
क्षितिज तक उसका पहरा
निशा उसे विदा ले
रोशनी उसके बिना नहीं
वर्णन उस स्त्री का जो आज जानती खुद को नहीं

तुममें मां की ममता भी
तुममें काली की ज्वाला भी
नारी! तुम आदि, तुम अनंत ,
सृष्टि का पहला उजाला भी।

भानू प्रिया, कला स्नातक, तृतीय वर्ष

बहाव

मैं बहना चाहूं ,
काश ये नदी ले जाए मुझको ,
अर्द्धशीश डूबें तरंगनी में ,
खेलूं उन तरंगों से ,
सरिता तुम्हारा वारि ,
मुझको शांत कर दे।

देह को छूती शीतल लहरें ,
जीवन में उत्साह भर दें ,
बहती रहूं ,
कोई किनारा न मिलें ,
अनंत अंबर को देखूं महकती धरा से ,
नयनों की तृप्ति हो जाए ,
उड़ान भरते विहग ,
मुझको भी सागर तक ले जाए ।

तुम्हारी खिड़की पर

तुम्हारी खिड़की पर
आके रुकूंगी पवन बनकर
तुम्हारे इत्र में मिल जाऊंगी सुगंध बनकर
स्पर्श करके तुम्हें
उन दीवारों में समा जाऊंगी
खुशबू बनकर
पट में लिपटकर तुम्हारे
खुद को सिलवा कर
उन धागों संग खुद को उलझा कर बसेरा अपना बना लूंगी
तुम बस महसूस करना तुम्हारे आशियाने में रहकर
मैं गीत अपने गाउंगी।

भानू प्रिया, कला स्नातक, तृतीय वर्ष

मनुष्य वास्तविकता

हे क्यों तू जन्मा?
इस सत्य को पहचान ले, किस कार्य के लिए है तुझे भेजा?
इस रहस्य को है तू जान ले, पालन कर तू अपने कर्तव्य का
न कर सांसारिक वस्तुओं पर अधिकार,
जान ले वास्तविकता मनुष्य की, इस सत्य को कर ले स्वीकार।
कुछ समय की है ये राख, है कुछ समय का शोक,
न हो सांसारिक माया के अधीन, इससे हे तू खुद को रोक।
प्राण जब थे उसकी काया में, जीवन भर रहा वो माया में।
स्वर्ग–नर्कका भेद रास न आया, कर्मों के नाम पर क्या ही कमाया।
बचे तू इससे, है एक उपाय का दर्पण,
प्रभु भक्ति में हो जा लीन, कर खुद को उनकी शरण में समर्पण।
जन्म–मरण के इस चक्र में रहे, छोड़ दे इस चाह को,
आत्मा से परमात्मा को मिलाकर पा ले मोक्ष की राह को।

कविता, कला स्नातक, प्रथम वर्ष।

क्या हैं जिंदगी

कुछ कर दिखाने का मौका हैं जिंदगी,
प्रभु का दिया हसीन तोहफा है जिंदगी ,
संघर्ष रहित बस धोखा हैं जिंदगी।
बाप को मानना भगवान हैं जिंदगी,
उनके पैरों का स्थान हैं जिंदगी ।
दो पल की खुशी, दो पल का गम,
बस दो पल का गुमान हैं जिंदगी।।
सुख दुःखों को ढोना हैं जिंदगी,
एक पल हँसना तो दूसरे पल रोना हैं ज़िंदगी ।
किसी की चाहत में।
खुद को खोना हैं जिंदगी
मानो तो दो ना मानो तो चार हैं ,
मानो तो जिंदगी हसीन न, मानो तो जिंदगी बेकार हैं।

कुलजीत (कविकृत), कला स्नातक, द्वितीय वर्ष

कमबख्त जवानी

छोटे से बचपन की छोटी सी कहानी,
बाप मेरा राजा मां मेरी रानी,
कभी मानी सबकी,
कभी बस अपनी हैं मानी,
दूर हो गए सबके पास होकर भी,
आई जो कमबख्त जवानी।
यूँ शामों में अंधेरों से बातें किया करते हैं,
बचपन की यादों को याद किया करते हैं,
कभी खुल के रोया करते थे,
अब छुप–छुप रोया करते हैं।
सबको लगता हैं, खुशी से जी रहे हैं हम,
ये कौन जानें की
जिंदगी में मेरी कितने हैं गम।
कभी दो रुपए के लिए रोते थे,
अब दो हज़ार भी कम लगते हैं।
पहले बिन मुँह धोए चल पड़ते थे,
अब बार–बार खुद को आइने में तकते हैं।
ये आयना भी मुझसे सवाल करता है,
तू लक्ष्य, दोस्त या परिवार पर मरता हैं?
आखिर लिखता क्यूँ हैं तू?
शब्दो से किसके लिए लड़ता हैं?
लाख सजाएं सपने कुछ पूरे, कुछ
आंखो से दूर हुए,
आई क्या कम्बखत जबानी,
हम सबके साथ होते हुए भी,
अकेले रहने पर मजबूर हुए।

समंदर...

कुछ लोग बदलते हैं मौसम की तरह ,
कुछ लोग समंदर जैसे होते हैं ,
उदार और गहरे ,
जिस पर मौसम के भी न
होते पहरे।
बस लहरें जो चलती रहती हैं उन
में कइयों का सहारा ,
कईयों को डूबा देती हैं ,
समंदर के अंदर की गहराई ,
समझनी आती हैं।
उसको जिसने कभी समंदर में डुबकी न लगाई हो ,
जिसके मन में उसे समझने की न आई हो।

कुलजीत (कविकृत), कला स्नातक, द्वितीय वष

Dear Shrawan Sir

आपसे एक बात कहनी है,
हां, मेरी बातें थोड़ी emotional हो सकती हैं पर फिर भी मुझे कहनी हैं।
हम चाहते थे कि आपकी डांट कम सुने, पर ये नहीं चाहते थे कि अब आपकी आवाज ही सुनाई न दें।
हमारी गलतियों पर आपका डांटना,
हमारे हर सवाल पर आपका थोड़ा मुस्कुराना
और थोड़ा डांट कर समझाना।
कभी सख्ती तो कभी नरमी,
ये सब अब यादों का हिस्सा बन कर रह जायेगा।
कभी एनएसएस के साथ हम इस कॉलेज को अलविदा तो कहेंगे,
पर आप हमारे दिल के कोनो में हमेशा बस कर रहेंगे।
हो सकता है कि आगे चल कर हम बड़ी–बड़ी डिग्रियां पा ले,
बड़ी–बड़ी जगह पर पहुंच जाएं,
पर हम आपसे बड़े कभी नहीं बन पाएंगे।
आपकी दी हुई सिख है, आपका दिया हुआ ज्ञान
शायद उन बड़ी डिग्रियों में भी नहीं होगा।
आपने हमें सिखाया ही नहीं बल्कि हमें समझाया भी,
हर गलती पर सुधारा भी।
कभी प्यार से समझाया
तो जरूरत पड़ने पर डांट कर भी समझाया।
कभी आंखे दिखाई,
तो कभी सिर पर हाथ फेरा,
कभी दोस्त बनकर साथ दिया
तो कभी मां–बाप की तरह दुनिया का ज्ञान दिया।
आज इस दिन आपको थैंक यू।
दिल तो भारी हो रहा है क्योंकि वो फटकार,
वो मजाक वाले डायलॉग, बो बाहर निकाल दूं क्या?
यह सब बहुत याद आएगा।
जब भी देश प्रेम की कोई बात होगी,
सबसे पहले आपका नाम हमारी जुबान पर आएगा।
जिंदगी में हम चाहे कितने भी बड़े मुकाम पर पहुंच जाए,
पर आपके लिए हम "मेरे बच्चे सबसे अच्छे" ही रहेंगे।
आपने हमें एनएसएस का ज्ञान नहीं
बल्कि जिंदगी की हकीकतों से रू–ब–रू करवाया है।
हम जहां भी रहेंगे, जो भी बनेंगे,
आपकी दी हुई सीख,
आपके दिए हुए संस्कार हमेशा हमारे साथ रहेंगे।

– स्वयंसेवी की कलम से ...

''हितोपदेशस्य वचनानि''

सज्जनों की प्रशंसा

1. नरिकेलसमाकाराः .श्यन्ते हि सुहृत्जनाः।
अन्ये बदरिकाकारा बहिरेव मनोहरा।।
हिंदी – सज्जन पुरुष नारियल के समान बाहर से दिखते हैं अर्थात् ऊपर से सख़्त और भीतर से मीठे और दुर्जन बेर के आकार के समान बाहर से ही मनोहर होते हैं।

2. षुचित्वं त्यागिता धैर्यं सामान्यं सुखदुःखयोः।
दक्षिव्यं चानुरक्तितत्व सत्यता च सहिश्णुताः।।
हिंन्दी –पवित्रता अर्थात् निष्कपटता, दानशीलता, सुख–दुःखमें समानता, अनुकूलता, प्रीति और सत्यता ये मित्रों के गुण हैं।।

3. रहस्य भेदी यांचा च नैश्ठुर्यं चलचित्तता ।
निःसत्यता द्यूतमेतन्मित्रस्थ्य दूष्ठम्।।
हिंदी – गुप्त बात को प्रकट करना, धन आदि की याचना, कठोरता, चित्त की चंचलता, क्रोध, झूठ और जुआ, ये मित्र के दूशण हैं।

4. पटुत्वं सत्यवादित्वं कथायोगेन बुध्यते।
अस्तब्धत्वमचापल्यं प्रत्यक्षेणावगम्यते।।
हिंदी– मनुष्य में स्थित चतुराई और सत्यवादिता उसके साथ वार्तालाप करने से पता चलती है; लेकिन उसमें जो अचंचलता अथवा गंभीरता है वो तो उसे देखते ही मालूम पड़ जाता है।

5. यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवाः।
न च विद्यागमोऽप्यस्ति वासस्तत्र न कारयेत्।।
हिंदी – जिस देश में सम्मान न हो, जहाँ कोई आजीविका न मिले, जहाँ अपना कोई भाई–बन्धु न रहता हो और जहाँ विद्या–अध्ययन सम्भव न हो, ऐसे स्थान पर नहीं रहना चाहिए।

कृतिका बिष्ठ, कला स्नातक, प्रथम वर्ष

अनुशासनम्

समाजे नियमानां पालनम् अनुशासनं भवति। जीवने अनुशासनस्य विशेषं महत्त्वं भवति। प्रत्येकस्मिन् पदे अनुशासनम् आवश्यकं भवति। अनुशासनं बिना किमपि कार्यं सफलं न भवति। छात्रेभ्यः अनुशासनं व्यवस्थायै परमावश्यकमस्ति। अनुशासितः जनः सर्वेभ्यः प्रियः भवति। सामाजिकव्यवस्थायै अनुशासनमत्यन्तम् आवश्यकमस्ति। यस्मिन् समाजे अनुशासनं न भवति तत्र सदैव कलहः भवति। शिक्षकस्य अनुशासने छात्रा निरन्तरमुन्नतिपथे गच्छन्ति। प्र.तिरपि ईश्वरस्य अनुशासने तिष्ठति। यः नर पूर्णतया अनुशासन पालयति सः स्वजीवने सदा सफलः भवति।

'संगच्छध्वं संवदध्वम्।'

हिमानी ठाकुर, कला स्नातक, द्वितीय वर्ष

स्त्रीषिक्षायाः आवश्यकता

वैदिककालाद प्रभृति इदानी पर्यन्तं यावत् भारतीयसंस्कृतौ नारीणां स्थानं महत्त्वपूर्ण वर्तते। शिक्षा मनुष्याणां स्वकर्तव्याकर्तव्यस्य ज्ञानं ददाति। शिक्षित जनाः शुभं कर्म कुर्वन्ति, अशुभ च परित्यजन्ति। यथा पुरुषेभ्यः शिक्षा श्रेयस्करी वर्तते, तथैव स्त्रीभ्योऽपि शिक्षाया महती आवश्यकता वर्तते। वर्तमान काले स्त्रीशिक्षायाः महत्वं सुप्रसिद्धमस्ति। यदा स्त्री शिक्षितं भवति। स्त्री अपि देशस्य नागरिका अस्ति। देशस्य उत्थाने अपि तस्या सहभागिता आवश्यकी अस्ति। यथा नार्यः शिक्षिताः सन्ति, तर्हि ताः स्वपुत्राणां पालनं रक्षणं शिक्षणादिकं च सम्यक्तया करिश्यन्ति। यदि पुरुषो विद्वान स्त्री च शून्या भवति तदा तयोः दाम्पत्य जीवनं सुखकरं न भवति। यस्मिन् देशे स्त्रीणामादरो भवति, स देशः समाजश्चोन्नितं प्राप्नुतः।

एतदर्थ स्त्रियाः शिक्षितत्वं आवश्यकताम्।
यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवताः
यत्तैस्तु न पूज्यते सर्वानिष्फला क्रियाः।

हिमा देवी, कला स्नातक, द्वितीय वर्ष

संस्कृत भाषा

1. संस्कृत भाषा अति प्राचीनतमा भाषा वर्तते।
2. वास्तविकरूपेण संस्कृत भाषा अस्माकं संस्कृतेः परिचायिका वर्तते।
3. अस्माकं संस्कृति संस्कृते आश्रिताः एषा भाषा सर्वे पठनीया एता मम अभिलाषा।
4. प्राचीनकाले संस्कृत भाषायाः बहुप्रयोगं आसीत्।
5 . प्राचीनाः सर्वे ग्रन्थाः संस्कृत भाषायां लिखिताः आसन्।
6. अनेकानां भाषाणां माता इति मन्यते

यत्: अस्या : कारणेन विष्वस्य अनेकाः भाषा जन्म प्राप्यन्ते। कालान्तरे विविधा प्रान्तीयाः भाषाः प्रचलिताः अभवन् किन्तु संस्कृतस्य महत्त्वम् अद्यापि अक्षुण्णं वर्तते।

7. सर्वे प्राचीनग्रन्थाः चत्वारो वेदाश्च
संस्कृत भाषायामेव सन्ति।
संस्कृत भाषा भारतराष्ट्रस्य एकतायाः आधारः अस्ति

पायल, कला स्नातक, प्रथम वर्ष

Friendship

Friendship is a priceless gift
That can not be bought or sold
Friendship's value is more than gold

A line has two ends
A triangle has three ends
A square has four ends
But the circle of
Friendship has no end

Make new friends
Do not forget the old ones
Because
New is silver
But old is gold

TOKENDER , B.A. 3rd Year

Value of Time

Time moves quickly,
It never slows down.
Before you reach for it,
It's already gone.

It waits for no one,
And never returns.
Always rushing,
I wonder why.

It leaves behind memories,
Both happy and sad.
So keep up with time,
As fast as it goes.
Once time is gone,
It never comes back.

DINESH , B.A. 3rd Year

मेरे पहाड़ा रा नोखा नजारा

मेरे पहाड़ा रा नोखा नजारा,
सरगा छुंहदी उछडी –उछड़ी धारा।
आपणे पहाड़ा री हांऊ के तारीफ करु,
अखली आसा शान निराली।
पशु–पक्षिए हुंदा जंगल भरूदा,
कधी नी हुंदा खाली।
हरे भरे जंगला रा नोखा नज़ारा,
ऐता विचे आसा जिउणा म्हारा।
मेरे पहाड़ा रै आसा आपणे–आपणे रीती–रिवाज,
सभै लोका करदा देऊ–देवी पैंदे विश्वास।
देऊ–देवी सा पहाड़ री शान,
याहा री तक दींदा अखलै लोका आपणी जाण।
देश सा मेरा षोभला सराज,
ज़खे सा देवा देवी रा राज।
लोका सा पहाड़ा रे बड़े नादान,
नई आसा ऐया अंग्रजी रा ज्ञान।
लोका सा पहाड़ा रे बड़े महान,
मेहमाना रा करदा बड़ा सम्मान।
ऐडा लोडी रहूं मेरे पहाड़ा रा मान,
अखली तरक्की तक देऊ हाऊं आपणी जाण।

उछडी –उछड़ी धारा परेंदे कांलेज बणाई
कांलेजा री आसा शान निराली
ऐतकी तके दींदा अखलै लोका आपणी कुर्बानी
छली–कणकी रै खेच हरे भरे,
ये खेचे प्रदेशी रै दिलडू हरे।

ऐ सा मेरे पहाड़ा रा नोखा नजारा,
साफ पाणी रै सा भरी दे नाला
सच्ची म्हारी वोली नहीं वोलदे झूठ
बेशभूषा सा अखली पाटू और सूट।

लामण वंऊरु नैणी आसा पहाड़ी गाणे री शान।
यै लाई पहाड़ी गाणे में चार चांद।
जुणी मेरे पहाड़ी बंजारा बणाऊं,
बंजार आसा सुन्दर स्वर्ग धाम।
बंजारा बणाऊंणे आलै वे,
कृष्णु रा शत–शत प्रणाम।

कृष्ण कुमार, कला स्नातक, प्रथम वर्ष

पहाड़ी बोली

पहिले हमा पहाड़ी बोलनी आई,
तेबरा बाद हमा बे हिंदी सिखाई।
जूणा लागे हूंदे ऐसा बोली का दूर,
तीया पछताउंने एक्सा धियाड़ी जरूर।
जासा लागदा पहाड़ी बोलने में शर्म।
करदे लागे एतका अंत,
इया नी आधे धोरे कर्म।
जासा इहँधा यह आपणी भाषा,
तीए संगा गला करने री रहिंदा बुजुर्गा भी आशा।
यह भाषा पड़नी हमीं बचाउणी ।
यह भाषा पड़नी हमीं बढ़ाउणी।
यह आसा हमारे पहाड़ा री शान,
ऐसी केरी आसा हमारी पहचान।
पहिले हमा पहाड़ी बोलनी आई,
तेबरा बाद हमा बे हिंदी सिखाई।
जूणा लागे हूंदे ऐसा बोली का दूर,
तीया पछताउंने एक्सा धियाड़ी जरूर।
जासा लागदा पहाड़ी बोलने में शर्म।
करदे लागे एतका अंत,
इया नी आधे धोरे कर्म।
जासा इहँधा यह आपणी भाषा,
तीए संगा गला करने री रहिंदा बुजुर्गा भी आशा।
यह भाषा पड़नी हमीं बचाउणी।
यह भाषा पड़नी हमीं बढ़ाउणी।
यह आसा हमारे पहाड़ा री शान,
ऐसी केरी आसा हमारी पहचान।

दवेंद्रा कुमारी, कला स्नातक, द्वितीय वर्ष

मेरे कॉलेज रा एक्सपीरियंस

मेरा कॉलेज का एक्सपीरियंस जो सभी का शोभाला रहू । हांयू और मेरी सहेली नी ज्यादा क्लास लाऊँदी थी। एबे हमें फाइनल ईयर पूजे समझ आई कि पढ़ना आसा जरूरी। आपणी मर्जी हुंदा कॉलेज में, ना सीखू कुछ माएं। बस खेलना सीखू। मेरा मानना कि कॉलेज में इच्छा मज़ा, पर पता नहीं लगा कि हम फाइनल ईयर केवी पूजे। कॉलेज खत्म बाद याद भी बखे आऊणी। सभी का बढ़िया लागा जेबें हां क्लास में पिछु बेशीकरे शरारत करा।

शालिनी कायथ, कला स्नातक, अंतिम वर्ष

मेरे कॉलेज रा अनुभव

हां बंजारा कॉलेज पढ़दा। यह कॉलेज बखे शोभलो आसा। इंदी पढ़ना मां बखे शोभला लागा। इंदी रोज हमा बे सीखने बे मिलदा। मेरा मेजर विषय इतिहास आसा। मेरे को इतिहास पढ़ना शोभला लागदा। मेरेको बचपन का इतिहास पढ़ने का शौक आसा।

संजना, कला स्नातक, अंतिम वर्ष

कॉलेज रा अनुभव

बारहवीं पास करने बाद आअ हां बंजारा कॉलेज बे। पहिली साल रही बढ़िया मेरे, क्यूंकि तेबरे तक नाईं थी माहाँ किछे टेंशन। दूजी साला बाद लागी करियर होर भविष्य री टेंशन। सेकंड ईयरा बाद आई सोठ की मेंटली स्ट्रॉन्ग बणू। संगी–संगी मौज मस्ती भी करी। नए–नए दोस्त बने और मेरी कॉलेज लाइफ अच्छी रहीं, पर यह लागा कि जो सपने मैं भली रे, तेया नीं हुणे कॉलेज लाइफ में पूरे। मेरा लक्ष्य सा बड़ा मुश्किल। चिंण साला हुई कॉलजे होर कम्पीटिशना री तैयारी करदे–करदे। कॉलेज में आज तक जो भी रहू काफी अनुभव मिला।

हरभजन ठाकुर, कला स्नातक, अंतिम वर्ष

मेरा परबाडी ग्रां

मेरे ग्रां रा नाम परबाडी आसा, यह पड़दा बठाहड़ा फेरे। मेरे ग्रां आसा शाठ टोल। मेरे ग्रां रे ओरी–पोरी फेर–फिरदे बूटे आसा। मेरे ग्रां एक बखे बड़ा ग्राउंड तखी हमें सभी खेलदा मैच। हमारे ग्रां बीच एक मंदिर तक्खी मेला लागदा। मेरे ग्रां में टोटल चिण–शौ लोका। हमारी ग्रां लागी रहँदा जाचा बगैरे भी। हमारे ग्रां का हेरा जोता भी। हमारे ग्रां रे लोका आ जमींदार खट्टा जमीन करा खेती–बाड़ी। हमारे ग्रां रे लौका मेहनती सीधे–सादे होर भोले भाले। माहरे ग्रां रे देउआ र नाम चोरल नाग आसा। स रहन्दा शील ग्रां जो कि हमारी पंचायत में चार गांव आसा ।

गगन ठाकुर,
कला स्नातक,
अंतिम वर्ष

मेरा गांव

मेरे ग्रां रा ना आधा धारडी। मेरा ग्रां आधा बंजारा का पंद्रह किलोमीटर दूर। मेरे ग्रां आधे पजाह घर। मेरे ग्रां रहन्दा एक–शौ–पजाह लोका। घणी केलों मंझे मेरा ग्रां आधा बखे शोभला साफ–सूथरा। मेरे ग्रां रे लोका बड़े भोले मनष करदा खेचा रा काम। मेरे ग्रां का थोड़ा उझे एक मंदिर देओ बालू नागा र, मंदिरा री जागाह बड़ी शोभली इहन्दा टूरिस्ट दुरा–दुरा का घूमदे। मेरे ग्रां रे लोका रहन्दा एकी–दूजे सांगा मिली–जुली करी होर करदा एकी–दूजे री मदद। ज्यादातर लोका आदे किसान जो करदा खेतीबाड़ी मंजे बड़ी–तगड़ी मेहनत। मेरे ग्रां जो बालो मंदिर आदो तखी आदे बालू नागा रे अलावा होर मंदिर भी, जहिं बालू नागा री रेखा री जाच (बालो पंजों) हुँदा। ऐसा जाचा वे इहन्दा लोका दूरा–दूरा का भाले। तँदी कोतता देउरे भीतर शुको–कूण्ड जेता का पानी निकलता, तीउ पांणी संघा जो भी जूठ–प्रेठ हुन्दा खत्म। दूजे दिहाड़े हुन्दा बल्दा–री लड़ाई, तेयूकी जो बल्द जीतू तिऊ पड़दा धाम दिणी सभै लोका नाहन्दा तिऊ रे घरा वे।

प्रीती, कला स्नातक, अंतिम वर्ष

मेरा ग्रां नागणी

मेरे ग्रां रा नाम नागणी आसा। मेरे ग्रां रे लौका एकी–दूजे संघा मिली जुली केरी रहँदा। मेरे ग्रां रे लोका देउ देवते मानदा। मेरे ग्रां एक जाच हुंदा। ऐसा जाचा र लोका साल भर इंतजार करदा। जाच भालदे सारे ग्रां रे लोका इहन्दा। यह जाच माता बूढ़ी–नागणी री सहा हुंदा। यह मंदिर नागणी ग्रां सड़का सेटा आसा। सारे ग्रां रे लोका माता बूढ़ी–नागणी पूजदा। नागणी जाचा वे हमारे ऋषि लोमश इहन्दा। तखे सहा य एक नाटी लागदा।

अश्वनी ठाकुर, कला स्नातक, अंतिम वर्ष

मेरा ग्रां खुहण

मेरा ग्रां खुहण आसा, जो बाली का ठारा किलोमीटर दूर धारा पेंदे आसा। यह आपणे सुंदर नज़ारे वे विख्यात आसा। यह ग्रां स परखोल वैली में देउ नारायण रा स्थान। तींदी हुआ शौज मेला और रेखा री जाचा। खुहण नेड–तेड आसा मजोआ, पाणु, धार ग्रां। खुहण सा यह सा परखोल री राजधानी होर देउ नारायण रा मढ़ेउल, जहीं रहा सा देउ नारायण। खुहण सा स्कूल भी बारहवीं तक। खुहण सामने हेरा बाहु, खाबल, तीर्था री जोता होर मोहणी–पेड़चा।

हरभजन ठाकुर, कला स्नातक, अंतिम वर्ष

मेरा गांव मझली

मेरे ग्रां रा नाम आसा मझली जो की चार ग्रां रे बीचो–बीच वसुदा आसा। मेरे ग्रां मेजें पंजताली घर आसा और मेरे ग्रां दूई मंदिर भी आसा। जोह काफी अच्छे अच्छे आसा बड़ाईदे। जोकि दूई के दूई मंदिर लकड़ी के आसा। जोह एक मंदिर आसा सो आसा हमारे कुलज देओ रघुनाथ रा हमारे बड़े देऊ रा। जोह दूजा मंदिर आसा जमलू ऋषि रा। एबे करदे हमें अपने ग्रां रे लोका री गला। मेरे ग्रां रे लोका री गला। मेरे ग्रां में लगभग चार–शौ लोका रहीदे होछने बड़े संगे और आसा बड़े अच्छे ते करदा बड़ी अच्छी–अच्छी बातें और एबे करनी म्हारे ग्राउड री गला तें म्हारे ग्राउंड आसा ग्रां के साइड सोह आसा सीमेटा और आधो आसा मातेरह। तखे खेलदा हाथे होछने बड़े संगे बेट, बाल वॉलीबॉल खेला। मेरे ग्रां तेबे सफाई री गला बाता बड़ी तगड़ी सफाई हूंदा म्हारे ग्रां। तखली बेटड़ी सभी इकट्ठे होके सफाई करदा। देउली री गला मजे तोह मझली ग्रां सबिक पहिले बड़ा भारी विश्वास दाहदे मेरे ग्रां रे लौका देउ देवो येह। म्हारे देआ रा नाम आसा देअ शेषनाग! जोकि म्हारे ग्रां रेंहदा। नाचने खेलने आसा बड़े शौकी। मेरे ग्रां रे गला बाता करदे। साला री दूई जाचा।

खीमे राम, कला स्नातक, अंतिम वर्ष

मेरा ग्रां ज़मद

मेरे ग्रां र नाम ज़मद आदा, जो कि बंजारा का दुइ किलोमीटर आदा। मेरे ग्रां ईश्वर महादेव में एक कोठी आसा। मेरे गांव में पानी री बाई, तखी सभी पानी भरा। मेरे गांव में लगभग चाहली घर आसा। मेरे ग्रां में फागली हूंदा जो कि फागणे एक्कू का चऊ प्रविश्टि तक चल्दा।

तिला, कला स्नातक, अंतिम वर्ष

जिंदगी एक सफर है

इस सफर में बहुत सी परिस्थितियां, बहुत से संघर्ष शामिल है, जीवन के इस सफर में परिस्थितियों तथा संघर्षों से मिलने वाली हर चोट इंसान को एक नया सबक देती है। इन्ही संघर्षो का सामना करके मनुष्य जीवन के इस सफर को पार कर पाता है। इसी के साथ जिंदगी में कभी गम, कभी खुशी हमेशा साथ–साथ चलते है, कभी चीजें हमारी मर्जी के तहत हो जाती है, कभी बहुत चाहते हुए भी चीजें हमारी मर्जी के तहत नहीं है, और इसी का नाम जिंदगी है। इसी तरह जीवन में प्रत्येक परिस्थिति में कुछ नया सीखने की चाह, और सदैव प्रयत्नशील रहकर तथा धैर्य रख कर कार्य करते रहना चाहिए।

किरना, कला स्नातक, द्वितीय वर्ष

मेरा ग्रां बरनागी

मेरे ग्रां रा नाम बरनागी आसा। ये मेरे कॉलेजा का 16 किमी दूर आसा। मेरा ग्रां छोटा जिया आसा। मेरे गांव रे लोका सीधे सादे आसा। मेरे गांव रे लोका सभी संग मिली जुली केरी रहा। मेरा गांव एबा टूरिस्ट री पसंद भी बणदा लागा। मेरे गांव रे संगा नदी भी बेहदा जो फ़लाचा का इच्छा। मेरा गांव बड़ा शोभला आसा। मेरे गांव महिला मंडल बनाई दे तथा गांव में सफाई रा बड़ा ध्यान करदा।

मेजर सब्जेक्ट

मेरा मेजर सब्जेक्ट हिस्ट्री आसा। मेरा मेजर सब्जेक्ट हिस्ट्री रखणे र कारण आसा की यह माह स्कूल टाइम से अच्छा लागा। हिस्ट्री में अपनी बीती साला रे बारे में जानने रा मौका मिला। हिस्ट्री में कई जानकारी मिला जो पहले रे युद्ध हुए भी तैया री जानकारी किताबा में मिला।

सोनी, कला स्नातक, अंतिम वर्ष

तीर्था–री–जोगणी

मेरे ग्रां रा नाम डुघली आदा। मेरा ग्रां घणे जांगला बीचों–बीच आदा। मेरे ग्रां कम से कम दस घर आसा होर चाहली लोका रहँदा। सारे घर नए तरीके संगी बनाईदे। एक घर सा बड़ा पुराना तक्खी नहीं कोई रहदे। सारे लोका मिली–जुली केरी रहिंदा, सारे लोका एकी–दूजे री मदद करदा। मेरे ग्रां रे बीचों–बीच एक मंदिर तीर्था–री–जोगणी। बारही–ठाहरी साला हूंदा इंडी जग। जेबरे तीर्था का वापिस आए तेबरे नहीं इंदे घरा भीतर। तैसा दिहाड़ी लगदा खले ही रहणा। तेऊखी, आनंदा जीभी दिओ। फेरी दिंदा जग, सारे बढा रे लोका इंदा जगा रे रोटी खांदे। साजे माघे लागदा तंदाका पानी आणना मकरा नेहुँने बे तंदाका। साजे फागुन्ने हूंदा दिओ नारायण रा तुआर फेर निकलता तंदाका फेर नाचदे नाचदे। तंदाका ईहणा शील्हा बती नाचदे–नाचदे पूजणे म्हारे ग्रां डुघली। तेबा मिलदा शाचा, मिहारा, डुघली र फेर नरहां आले संघा।

चमना ठाकुर, कला स्नातक, अंतिम वर्ष

मेरा ग्रांओ : फरियाड़ी

मेरे ग्रांओ नाम आसा फरियाड़ी। बखे शोभला आसा ग्रांओ शोभली साफ–सफाई हूंदा करीदी। फरियाड़ी लोका आसा बड़े मेहनती। मेरे ग्रांओ आसा लक्ष्मी नारायण। आरो मंदिर और देवता पीछू हूंदा कई प्रकार के मेले तेबा लागा शोभली शोभली जांचा। मेरे ग्रांओ रे लोका रही मिली जुली एक दूजे रा सहारा वणा दुःख रे वक्त मदद केरदे। मेरे ग्रांओ आसा

सड़का सेटा। पेड़ पौधे हरा भरा आदा मेरे ग्रांओ। पाणी री बाई तन्दी धोआ झिकड़े। पाणी नहीं कमी हुंदी। लोका इंदा दुरा दुरा का मेरे ग्रांओ हेरदे। तेबे लोड़ी तुम्हें भी आए।

आशा, कला स्नातक, अंतिम वर्ष

मेरा ग्रां शाईरोपा

मेरे ग्रां रा ना आदा शाईरोपा। मेरा ग्रां आहदा बंजार का पांच किलामीटर दूर। रे ग्रां रा ना पड़ू शाई रोपा तेबा क्यूंकि पहिले बउंदा थी तोही शाई और तैसा शाई निंदा थी देओ सकीर्णी बे तेबा आहदा तखला ना शाई रोपा। मेरे ग्रां आहदे पच्ची घर, ईन्दी रहन्दा सत्तर–अशी लोका। मेरा ग्रां आहदा तीर्थन वैली में एक जगह। मेरा ग्रां आहदा गाढ़ा सेटा बसु दा। मेरा ग्रां आहदा एक टूरिस्ट प्लेस और गाढ़ा सेटा आसा तेवा इंदा अख टूरिस्ट। मेरे ग्रां रे लोका रा व्यवसाय आदा खेती होर टूरिज्म। मेरे ग्रां आहदा एक पार्क तीयू रा ना आदा ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क। मेरे ग्रां का थोड़ा दूर एक वॉटरफॉल तखला ना सा छोई वॉटरफॉल क्यूंकि स जाघा छोई देओ री। मे मेरा कुलज आ लोमश ऋषि जो कि सकीर्णी रा गुरु आसा। हमे रहन्दा सकीर्णी री जाघा होर हामा बे बोलदा सकीर्णी री जेठी बढ़ी।

भुवनेश्वरी, कला स्नातक, अंतिम वर्ष

मेरा फरियाडी ग्राओं

मेरे ग्राओं लागा मा पठी शोभला। मेरा ग्राओं रा नाओं मनानी। मेरा ग्राओं रे लोक रहा सभी मिली जुली केरे। मेरा ग्रामों आसा साफ–सुथरा। म्हारे ग्राओं मना सभी त्यौहार मिली जुली केरी। म्हारे ग्राओं रे नेडे–तेडे बड़े भारी पौधे जेहे कि बरह, चील, कायली। म्हारे ग्राओं पानी री अच्छी सुविधा जेहे की पानी री एक बाई ओसदी, एतके अलावा सभी रह घरे–घरे पानी रे नलके आसा। म्हारे ग्राओं रे सभी लोग का खेती बाड़ी रा काम करदा। म्हारे ग्राओं सड़का का थोड़ी दूर, हामा लगा 15–20 मिनटा रा रस्ता पैदल लागदा हांड़ना होर सारा सामान लागा ग़रारी (स्पेना) में आणना। म्हारे ग्राओं होआ फागली साजै, बाई होर चैई दिहाड़े फागणे। साजे होआ होछी फागली और बई होआ बड़ी फागली चैई होआ देवा र तौर। एता हेरदे इच्छा दुरा–दुरा का लोका। म्हारे देआ रा नाम लक्ष्मी नारायण, देआ रा मंदिर फरियाडी ग्राओं।

शिल्पा, कला स्नातक, तृतीय वर्ष

पहाड़ी उपनियां

1. आर भी छलाकी, पार भी छलाकी,
मन्जे–मन्जे गम्भरू पाकी **उत्तर = छेरटू (घी)**
2. ऊपनी मेरी मझाणी, साजे माघा वे ढाणी **उत्तर = चेली**
3. तिण तणैलेया तिण–तिण, उपरी वाउडी रायसिना
उत्तर = मकड़ी (गलांहु)
4. पारा ओरी आई डिउंडी काठी, तेसरे पेटे रस,
खाणी था गल कर, रुपय लगणे दस। **उत्तर = जलेवी**
5. धेडी निउले, राची सिराजे **उत्तर = धुंगर**
6. पार गरे तउटे झूला **उत्तर = सबले का पत्ता (पाच)**
7. पारा उरी आई शिमले री डाग,
तेसके पेटे जलदी आग। **उत्तर = लालटेन**
8. इतना एक पिदु, सारे गरा कशीदु **उत्तर = काधुं**
9. पचेकडु शोरू पेटे दादं **उत्तर = कद्दु**
10. पारा ऊरी आअ डगवडग,
कोली सुथणी कोला दंगा **उत्तर = बरेघ (शेर)**
11. ची भऊ, एके गाची। **उत्तर = धलन**
12. हरी थी मन भरी थी ,नौ लख मती जड़ी थी ,
राजा जी के बाग में, शाला ओड़े खड़ी थी।
उत्तर = चली (मक्की)
13. काईथ मोटे कथेणी दुबली,
बझी पाणी ,सिड्डू उबली। **उत्तर = मोडी**
14. खड–खड वाउडी, खड–खड तीरे,
लाल बशत्र काले मुंडे कीड़े **उत्तर = खर**
15. बिसुओं के सिर काट लिए न मरे न खुन किया
उत्तर = नाखुन
16. पारली धारा ऊटौ किरडु..
उतर = नाक
17 लाल लाल लहरी.. फेर बेठे पौहरी..
उतर = आग
18 अर भी तोडू, पार भी तोडू,
बीचे बीचे सुने र गोडू। **उतर = देउ**
19 एक बेटडी धैड राच खडी ।
उतर = सीढ़ी
20 उपनी मेरी साबजादी, पांजा रीक् मां पंजाह री दादी।
उतर = सरनाई
21 दूई मर्दा एके बालू
उतर = चिमटा
22 पारा उरी आई रिंगी, खोला पूरी छींघी
उतर = सरनाई
23 ऊंटा जैई लामी क्याडी, वराघा साई दिदा झाड़,
मेरी उपनी बुझले, तमें पढ़ने आले सभी छबाड़।
उतर = गिद्ध

भानु प्रिया, कला स्नातक, अंतिम वर्ष

"समाजे अन्तर्जालस्य प्रचलनम्''

अद्यतनस्य डिजिटल युगस्य मध्ये सामाजिक अंतर्जाल माध्यमेन मानवजीवनस्य महत्त्वपूर्ण अंशः जातम्। फेसबुक, इन्स्टाग्राम्–व्हाट्सएप्प्–ट्विटर यूट्यूब इत्यादयः संचारस्य शीघ्रतमः साधनानि। सन्ति। ऐतेषु माध्यमेन केवलं, अपितु देशस्य विष्वस्य च नवीन वार्तामिः सह सम्पृक्ताः अपि भवन्ति। अन्तर्जाल– माध्यमेन शिक्षा व्यवसायाः समाजिक जागरणं च नवीनं रूपं प्राप्तम्।

ऑनलाइन पाठ्यक्रमाः, बेबिनार जागरूकता अभियानेन जनाः नूतनं ज्ञानं लभन्ते। स्वीयं विचारान् च परस्परं विभजन्ति।

अस्य बहवः नकारात्मकाः प्रभावाः अपि सन्ति। यदि अत्याधिक कालं अन्तर्जाल–मध्यमेन व्यतीतः भवति, तर्हि जनानां उत्पादकतां हासं गच्छति। ते च आभासीय–आसम्त्यांः षिकारः भवन्ति अपि च मिथ्या–सूचनाः अफवाहाः च शीघ्रं प्रसारं गच्छन्ति। येन समाजे भ्रमस्य स्थितिः जायते। सामाजिक मध्यमे लाइक्स टिप्पणीनां च प्रतिवर्धमाना स्पर्धा मानसिक रोगाणां कारणं भवति। साइबर अपराधाः गापनीयता संबंद्धाः समस्या च निरन्तरं वर्धन्ते। अतः अन्तर्जाल माध्यमेन आभासीय पटलस्य विचारपूर्वकं मर्यादित–समये, यथोचितं प्रयोगः क्रियते, तर्हि एशः ज्ञानस्य विकासस्य च उत्तमं साधनं भवितुमर्हति। आवश्यकं सत् वयं अस्य सकारात्मकं पक्षं स्वीकारणीयं नकारात्मकं प्रभावं व निवारणीयम्।

भानू पिया, कला स्नातक, तृतीय वर्ष।

पंचतन्त्र ग्रन्थात् संग्रहिता श्लोकाः

1. उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या यत्ने .ते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः।।

हिन्दी– उद्योगशील वीर पुरुष को ही लक्ष्मी प्राप्त होती है। "भाग्य में होगा तो मिलेगा ही'' कायर पुरुष जन कहा करते हैं। अतः मनुष्य को भरोसा छोड़कर आत्मशक्ति के अनुसार पुरुषार्थ करना चाहिए। पुरुषार्थ करने पर भी यदि सफलता नहीं मिलती है, तो पुरुष को यह देखना चाहिए कि दोष कहां रह गया है।

: मित्रसम्प्राप्तिः :

2. न विश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्ते नातिविश्वसेत्।
विश्वासाद्भयमुत्पन्नमपि मूलान्यपि नि.न्तति।

हिन्दी : अविश्वस्त व्यक्ति का विश्वास नहीं करना चाहिये और विश्वस्त व्यक्ति का भी अधिक विश्वास नहीं करना चाहिए। क्योंकि विष्वास से उत्पन्न भय (विपन्ति) मनुष्य के मूल को भी विनष्ट कर डालता है।

3. न वध्यते ह्यविश्वस्तो दुर्बलोऽपि बलोत्कटैः ।
विश्वस्ताश्चाशु बध्यन्ते बलवन्तोऽपि दुर्बलैः ।।

हिन्दी : अविश्वस्त रहने पर दुर्बल व्यक्ति भी बलवानों के द्वारा मारा नहीं जा सकता और बलवान होने पर भी विश्वस्त होने के कारण वह दुर्बलों के द्वारा भी मारा जा सकता है।।

4. सुकृत्यं विष्णुगुप्तस्य मित्रप्राप्तर्भार्गवस्य च।
वृहस्पते रविश्वासो नीतिसान्धास्त्रीधा स्थितः।।

हिन्दी : नीति के तीन मार्ग होते हैं। विष्णुगुप्त के अनुसार मनुष्य को गुप्त रूप से यथोचित उपाय करते रहना चाहिये। शुक्राचार्य की . ष्टि में मित्रों को बढ़ाना ही मनुष्य की सफलता साधन हैं। किन्तु सुरगुरु वृहस्पति का कथन है कि मनुष्य को सर्वदा अविष्वस्त भाव से रहते हुए अपना कार्य करते रहना चाहिए।

5. ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति!
भुङ्क्ते भोजयते चैव षड्विधं प्रीतिलक्षणम्!!

हिन्दी : प्रीति के छः लक्षण बताये गये हैं – प्रेमपूर्वक किसी वस्तु को देना और लेना, अपनी गुप्त बातों को कहना और दूसरे की गुप्त बातों को पूछना, स्वयं मित्र द्वारा प्रदत पदार्थ को खाना और अपना खिलाना।

6. नोपकारं विना प्रीतिः कथञ्चित् कस्यचिद् भवेत् ।
उपयाचित–दानेन यतो देवा अभीष्टदाः ।।

हिन्दी : उपकार के बिना किसी की भी किसी मनुष्य के साथ प्रीति नहीं होती। देवता भी अभीश्ट उपहारादि के प्रदान करने पर ही मनोवांच्छित फल देते हैं, अन्यथा नहीं।

प्रियंका ठाकुर,
कला स्नातक, प्रथम वर्ष

Happiness

In a small village surrounded by beautiful mountains, there lived an old man named Hari. He was unmarried and lived alone. Every morning, he would sit under a Banyan tree by the river, at the edge of the village, where he carved wooden toys for the local children. Hari was known for his kindness and the stories and wisdom he shared with anyone who chose to sit with him. One day, a weary traveller, having wandered far and wide in search of happiness, arrived in the village. Spotting Hari under the tree, he approached him and asked where he could find happiness. Hari smiled and handed the traveller a small wooden bird he had just finished carving.

"Happiness is like this bird," he said. "It is not something you find but something you create, and share with others. It has nothing to do with material possessions, and after travelling the whole world, you will find that happiness lies within you. For me, happiness is sitting here and making toys for children. When I see the joy in their eyes, it fills me with happiness. My joy comes from others' happiness, and that feeling is truly wonderful. After listening to Hari, the traveller was inspired and decided to stay with him. Hari welcomed him, and they talked and completed some chores. The Traveller learned a great deal from Hari. He realised that true happiness was not a hidden treasure waiting to be discovered, but rather a warm and vibrant feeling that blossoms from acts of kindness and deep connections with others.

HEMANT , B.A. 3rd YEAR

A Helpful Boy

Once upon a time, a boy named Hari lived in a village. He was an orphan and had no family. He lived alone but was very kind and helpful. However, the villagers did not like him. They often gossiped about him and spread false rumours that showed him in bad light. Once, during the rainy season, there was heavy rainfall. The river near the village overflowed, causing a flood. The rising water threatened the homes and lives of the villagers. People were terrified and did not know what to do and where to go. In this moment of crisis, Hari stepped forward as a ray of hope. Using his knowledge of the area, he guided the villagers to safer places. He helped in distributing the limited supplies, ensuring that everyone had the necessities. As the villagers watched Hari's selfless efforts, they realized that had misunderstood him. They saw how he valued their safety before his own. When the flood finally ended, life in the village returned to normal. But one thing had changed- the villagers' attitude toward Hari. They no longer saw him as an outsider but as a hero and a valuable part of their community.

RITIKA THAKUR , B.A. 3rd Year

The Wanderer's Journey

In a beautiful village, there lived a man named Raghu. He was a dreamer, full of big goals. He wanted to master every skill and overcome every challenge. But he rarely finished what he started. Over time, frustration weakened his confidence. He started overthinking and spent most of his time alone in a dark room. Seeing his friend struggle, Ram gave him some advice. He told Raghu to travel and learn from everything he saw on his journey. The next day, Raghu set out on his journey. He visited many villages and met many people. He saw farmers working in the fields, anglers catching fish, and others doing different jobs. He noticed that no one could finish their work instantly-every task required patience. When Raghu returned home, he thought deeply about his journey. He realized that every job takes time and cannot be rushed. He understood that he could not do everything at once-he had to focus on one thing at a time. He also learned not to compare himself with others. From that day on, Raghu's life changed. He no longer wanted to do everything. Instead, he focused only on what truly mattered to him.

NIKHIL , B.A. 3rd Year

Marco

There was once a small, loving family-a couple and their 14-year-old son, Jay . Jay was deeply attached to his parents and shared a close bond with them. Ever since childhood, he had a special love for dogs and always dreamed of having one. On his 16th birthday, his parents fulfilled his long-cherished wish by gifting him a puppy. Overjoyed, he named the dog Marco and treated him like his family. Marco quickly became his closest companion, bringing him endless joy and comfort. However, a tragedy struck when his parents lost their lives in a devastating car accident. Left heartbroken, the boy moved in with his grandmother. In his grief, Marco became more than just a pet- he was the last gift from his parents, a living reminder of their love. The bond between Jay and Marco grew even stronger, as he found solace in the presence of the one connection he still had to his lost family.

As time passed, he grew into an adult and secured a job. However, life had taken another turn-his grandmother had also passed away, leaving him truly alone. Despite his losses, one thing remained constant in his life-Marco, his beloved dog. Each morning, he would feed Marco and spend some time playing with him before heading to work. In the evenings, he would return home with a small treat for Marco - his favourite ice cream, and they would share moments of joy. Their bond was unbreakable, built on years of love and companionship. However, one evening, when he came home as usual, something was missing. Marco was not there to greet him at the door. Panic set in, as he searched the house, calling out his name. His heart sank when he finally found Marco lying lifeless in the backyard. Overcome with grief, he broke down in tears, mourning the loss of his dearest friend. For weeks, he shut himself away, unable to face the world. He questioned his fate, asking why everyone he had ever loved was taken from him. Months passed before he finally forced himself back to work, but he was not the same person again. The once lively and hopeful Jay had become quiet and withdrawn, carrying the weight of his sorrow. One day, as he walked down the street, he noticed a stray dog, badly injured and struggling to move. The poor creature, weak and trembling, was desperately dragging itself toward a water tap, yearning for a drop to quench its thirst. Watching the dog's silent struggle, something shifted within him. While looking at the poor dog he suddenly realised that death is a bitter truth of life but we should still love with all our hearts and not get attached to anything. Jay adopted that dog knowing well that the dog will not survive for long. From that day on, he chose to embrace life with kindness, knowing that every moment of love, no matter how short-lived, is always worth it.

Mamta, B.A. 3rd year

Mask Festival

The Mask Festival is celebrated every year during Fagun Sankranti in February in various villages of Tirthan Valley and Banjar subdivision of Kullu district in Himachal Pradesh. During this festival, villagers wear masks that look quite scary. According to a legend, the oldest masks were created by Lord Narayana to protect the village from demons and evil forces. Only a few selected people wear these masks, and they perform a special dance. Villagers believe that this dance helps drive away evil spirits from the village. The festival lasts for three days. On the first day, the mask dance is performed for the village folks. On the second day, people wearing masks visit every house in the village to bless the families with happiness and prosperity. A special dish called Childu is prepared throughout the village. As part of the tradition, participants also use harsh and abusive words, believing that this scares away evil forces. In the evening, after all the rituals are completed, a grand dance is organized in the deity's ground, where men and women dance together, marking the end of the festival.

PALLAVI , B.A. 3rd Year

The Content Heart

In reflecting on the chapters of her life, Suzy, in her old age, questions the alternate paths her life could have taken. She lived her life indulging in all fields of work, which paid her well enough to survive. She lived by her own rules and stayed true to herself. She embraced a life of solitude. She travelled the world alone, experiencing different cultures. Society labelled her selfish, accusing her of wasting her time and resources on herself while other women her age were busy raising children and tending to their husbands. How dare she defy tradition? Yet, through her travels, she mastered multiple languages and built friendships across the globe. Though many judged her and questioned her character, she remained unshaken and unaffected by the baseless rumours. Only in her old age, sitting alone in her small rented apartment, she dreamt of living a simple life with kids and family. She yearned for the simplicity she had missed, ignoring all the unique life experiences she had.

In the other universe, Suzy had worked an ordinary 9 to 5 corporate Job, which paid her well. She now has a cherished family of children and grandchildren. As she grew older, she regretted not prioritizing herself and her passion. She remained in her comfort zone so much that it ended up becoming a cage for her. As a child, Suzy dreamed of becoming a renowned singer. She consistently won singing competitions at school and state levels, earning recognition for her exceptional talent. During her college years, she became widely admired for her voice, gaining a loyal following. Despite her passion, her attempts at auditions never led to the breakthrough she needed to pursue singing as a full-time career. In her late twenties, she married the love of her life after seven years of being together. Both she and her husband worked tirelessly, rising to respected positions in their respective companies. They built a beautiful family with two children, and though their relationship faced its share of challenges, they remained each other's strongest support system, never drifting apart. Amid the responsibilities of work and family, Suzy slowly let go of her passion for singing. She devoted herself entirely to her loved ones, putting their needs before her own. However, as the years passed, a deep sense of regret settled in. She realized that in prioritizing everything else, she had neglected her own dreams. The comfort of her routine, once reassuring, had turned into an invisible cage- one that kept her from the life she once longed for, but she overlooked the fact that she had a loving life partner, who was always there for her, her family who always supported her and her close friends.

In yet another universe, she did not get the opportunity to reach old age. She lost her parents at a young age and had to struggle to survive. As a minor, she sang in cafes and bars, barely making enough to get by. At 16, a well-known music director recognized her talent and gave her the opportunity to work on her first music album, which became a huge success. With passion and fate on her side, she quickly rose to fame, becoming one of the most celebrated singers of her time while still in her teens. However, her journey was far from easy. She was overworked and endured immense stress throughout her teenage years. Despite her success, she was constantly pursued and scrutinized by the media. Over time, the pressure took a toll on her, leading to substance addiction. As her dependency grew, she fell into deep depression. Eventually, overwhelmed by it all, she ended her own life. She lived different lives in different universes— loved, lost, ruled, and roamed — yet something always slipped through her grasp.

Across all realms and realities, her heart's content remained a distant dream, never hers to hold. It shows the unquenchable nature of human desire — that no matter how many experiences, achievements, or lives one may have, true contentment often remains elusive. It's a reflection on how fulfillment isn't tied to external circumstances, but to something deeper within.

Kanika, B.A. 3rd Year

Friendship : God's Gift

Dev was a poor boy who lived in a village with his sick mother. His father had passed away from a heart attack, leaving Dev with the responsibility of caring for his family. At just seventeen, he worked tirelessly to support his mother. Despite his struggles, Dev enjoyed making new friends on social media, where he met a boy named Shivu. The two quickly became close, and Shivu affectionately called him Devu. They trusted each other and shared their thoughts and experiences. However, Devu hesitated to talk about his problems, fearing that Shivu, coming from a wealthy family, might judge him or even end their friendship. But Devu's fears were unfounded. One day, Shivu unexpectedly visited his home. Devu was shocked and tried to make his friend feel comfortable. Seeing this, Shivu held Devu's hand and asked why he had never shared his struggles- his mother's illness, his hardships, and his need for help. Devu finally opened up, revealing his worries. Hearing this, Shivu's eyes filled with tears. He said, "I don't care about your social status or background. You are my friend, and even if you offer me just a piece of bread, I will eat it with love." Together, they took Devu's mother to the hospital, and when her health improved, Shivu prepared to leave. Overcome with emotion, Devu broke down in tears and hugged him tightly. With heartfelt gratitude, he said, "You are more than a friend to me- you are like a brother. I must be truly fortunate to have found you in my difficult life." Their bond was as strong as that of Heera and Moti in Premchand's story. They proved that true friendship transcends wealth and hardship, standing strong in the face of life's challenges. Friendship is truly a precious gift that brings light even in the darkest times.

Ramesh, B.A. 3rd Year

Mother's Words

A little bird sat on a tree branch, singing a sweet song. Suddenly, a strong wind blew, knocking the bird off the tree. It tried to fly back, but the wind was too strong. Just when it felt lost, it remembered its mother's words "In tough times, hold on to something and sing your sweetest song." The bird quickly grabbed a nearby twig and kept singing. The wind continued to roar, but the bird's song was even louder. Slowly, the wind calmed down, and the bird flew back to its tree, still singing happily.

Monika, B.A. 3rd Year

Fierce Monsoon

It was monsoon season in Gushaini. Light rain started falling, but soon it turned into a heavy downpour. The river swelled, and a flood threatened the village. Everyone was worried about their homes. Rohan and his wife Priya were happily married. Over time, differences grew between them. They had no children, and their days just passed by. Rohan felt that Priya did not listen to him, while Priya thought that Rohan did not understand her feelings. Now, in the crisis, Rohan and Priya worked together to secure their home. This teamwork helped ease some of the tension between them.

An elderly villager, Sher Singh, said, "I've never seen such heavy rain before. This flood could be massive." His words made them even more anxious. They quickly moved some of their belongings to a safer place, but the situation worsened. Water entered many homes, roads collapsed, and transportation stopped, causing major problems. The rain continued for five days, bringing destruction everywhere. But when it finally stopped, people felt relieved. Rohan and Priya checked their house- it had submerged in water, and most of their belongings were lost. However, they were safe, and for that, they were grateful. The flood brought them closer, and their misunderstandings faded away. The government soon set up relief camps for the affected villagers, where Rohan and Priya also took shelter. A few days later, financial aid was announced for the affected families, and they received support. Months later, they started rebuilding their house, working side by side. Slowly but surely, their house was restored, and so was their home. Today, Rohan and Priya live happily in their new home. The flood was a learning experience in their lives that taught them an important lesson- love, understanding, and working together are the real keys to happiness.

Saurav Sharma, B.A. 3rd Year

The Train Story

Since childhood, I had a strong desire to see a train. One day, I was travelling by bus to Chandigarh with my mom, hoping to get a glimpse of one. Unfortunately, I did not see any train, which made me sad. When we reached Chandigarh, I felt very disappointed. However, we had come for a family function, and I did not want my disappointment to spoil the trip. Therefore, I enjoyed the party. The next day, I travelled to Patiala with my aunt. I did not tell her about my wish to see a train. We reached home at night and went to sleep. While sleeping, I suddenly remembered my dream of seeing a train. At around 4 AM, I heard the sound of a train. Half asleep, I thought I was dreaming. In my dream, the song "Shimla tha ghar uska," was playing, and just as the song began, a train appeared. At 7 AM, my cousin came to wake me up for morning walk. When we stepped outside, I could not believe my eyes- a train was passing by right there! I stood there, watching the train go by, without blinking. It felt like pure magic!

Simran Sood, B.A. 3rd Year

Seeds of Hope

Our family owns an apple orchard, and it is our main source of income. This orchard has been in our family for generations, and we take great pride in it. We care for it with love because, for us, it is more than just a way to earn money-it is our way of life. One year, disaster struck when a flash flood swept through our orchard. Finding workers, was difficult, so our family spent long days clearing the soil, supporting the trees, and replanting. It was a tough time, and at times, we felt like giving up. That winter, there was no snow or rain, making things even worse. As weeks turned into months, our worries grew. Without enough water, we had to work day and night to save our trees. But slowly, with time and effort, our orchard began to recover. It was a reminder that hard work and determination can bring dreams back to life.

Sunaina, B.A. 3rd Year

You are Unique

"Live your life today in a way that most people won't, so that you can live the rest of your life in the way most people can't." Just like every animal, flower, tree, or rock, you are unique in your own way. Take my younger brother as an example. He is in 11th grade, but unlike me, he is not interested in academics. However, our family keeps comparing us, constantly scolding him to study harder and get good grades like me. I feel that this only discourages him and makes him feel ashamed. I wish I could make my family understand that my brother and I are two different individuals, each with our own likes, dislikes, interests, strengths, and weaknesses. Just as I am good at academics, he has talents that I cannot even imagine. Not everyone can or should become a doctor, engineer, civil servant, dancer, or singer. What about diverse interests and opportunities available around us? We all have different perspectives, abilities, and passions. If everyone were allowed to follow their own path, the world would be a much richer and more creative place. Instead of forcing everyone to fit into the same mold, we should embrace our uniqueness and discover our own strengths. No one is perfect, and it is often our imperfections that make us special. Remember, you were created the way you are for a reason. You are you, and I am I-that is what makes human life so meaningful and extraordinary.

Geetanjli, B.A. 3rd Year

A Story of Many Kavyas

It has been 77 years since India gained independence, but many girls still do not have freedom. Most have experienced discomfort and faced lecherous gazes at some point. It is sad and disgraceful that we are unable to ensure the safety of half of our population. Kavya and her sister lived together in a city away from their village and had been studying there since childhood. Aadya's friends Aditi and Gunjan also lived in the same city. They had just become Teenagers, experienced puberty and were dealing with many social and physical changes. They were noticing how people reacted and behaved with them. Aditi and Gunjan had phones, were active on social media, and had boyfriends, while Kavya was different from her friends. She was a simple girl without a phone or a social media account. However, her friends decided to make an account in her name. Kavya initially refused but they convinced her. She reluctantly agreed that she would not actively use her account. Her friends took liberties and started posting her pictures. They would message and talk to boys using her chat. After seeing her posts, some boys approached her but she turned down their requests to be friends. A boy named Vipul, her senior at school became obsessed with her. He started following her around. Soon she noticed she was being followed. Vipul told her and her friends that he wanted to be in a relationship with her. She did not know him well and refused to even talk to him. However, he continued to follow her for months. Due to peer pressure, she eventually accepted his proposal and thought she might as well try it. They spent some time getting to know each other. It did not take long for Vipul to start dropping hints about his desire to be physically intimate with her. Kavya did not seem to notice. One day he directly told her about his irrepressible desires but she refused his overtures. Feeling anxious and insecure, she decided to end the relationship. That night she told him not to follow her around and that, this was the end of the road for them. She was not ready for a relationship yet. Unable to bear it, Vipul felt an angry hatred towards her and started planning to harm her in some way. He requested one of Kavya's friends to talk to her and convince her to meet him once. Aadya initially declined but he insisted and told her that he was sorry and wanted to rectify his mistake. Kavya agreed but knew, she would not change her mind about the relationship. When she met Vipul, he told her, his parents wanted to talk to her. She felt unsure but followed him anyway. When they reached his place, he closed the door behind her and turned off the lights. She realised there was no one at home besides them. She noticed that he was also high on some drugs. He dragged her forcefully and gagged her. He overpowered her and she could not do anything to resist or fight him. He raped her as she lost consciousness. When she regained consciousness, she found herself in pain, her clothes torn, and bruises on her body. It took a few moments for her to realise what had happened. There was a tsunami of emotions within her. She no longer knew what she felt or was supposed to feel. She wanted to scream but her voice would not help her. She tried to stand but her legs gave up. There were a few tears, which had dried up on her cheeks, totally drained of blood. Her vision was blurred as she stared blankly in the distance. Confused and scared, she felt angry and helpless. She blamed herself and felt ashamed and disgusted. Several minutes passed as she sat there on the floor trying desperately to feel stronger, trying to convince herself that it was not her fault. But the shame would not go away. She decided never to speak a word about it to anyone. In a flash, all her faith in humanity particularly in men had been lost. It has been years since this happened. Even today, she does not dare to let any man come close to her. She might never have the strength to trust another man. Choosing instead to disappear in the countless hordes, with lowered eyes trying to regain some dignity, she survives.

Radhika, B.A. 2nd year

Toxic Ties

It was almost evening when Aryan came back from his school. He almost reached his home when he heard loud noises coming from inside. It was his parents. They were fighting again. He went inside, quietly locked his room and sat on his bed. He was tired of the arguments of his parents. He lay on his bed and remembered the conversation of his classmates. He realised one of his classmate's parents were divorced because they always fought. It was getting hard for them to stay together, and that boy was now living with his mother. Aryan thought to himself "What is worse for a child? Is it the parents who are divorced or the parents who should have been divorced but stayed together?" Aryan snapped out of his thoughts when he heard his mother shouting for him. He was always expected to work while his brother enjoyed himself. Aryan was the elder, while Ansh was the younger son of Shanta and Mukesh. Ansh was just a year younger than him. Whereas Ansh was the sunshine of his parents, Aryan was invariably neglected by them. He remembered when they had some work for him or he had done something wrong. He was the one to be blamed. Once his brothers did something wrong but the blame was put on him. Whenever he needed something for himself he was always refused or yelled at by his parents. Once he wanted to buy shoes but his father Mukesh said "You just bought shoes last month what happened to them? Look at him... he wants to have another pair of shoes." Aryan never liked the way he was treated. He always tried his best to get a little love from his parents. He always did well in studies but he was never loved. He dated a girl in his school but she also cheated on him, which made him miserable. The next morning when Aryan went to school, he was approached by his friend, "Hey, how are you?" his friend said.

"I am fine," Aryan replied. After that, they talked a little and went to their classes. Aryan wondered, why people say, "I am fine or I am good," when they are not.

In the evening, as usual, Aryan went home, but today, when he reached home, it was different: no yelling, no fighting. When he opened the door, he was greeted by his mother, "Come to the living room beta," Shanta said with a smile on her face. Aryan was confused, and he followed her to the living room. He saw his father Mukesh sitting on a chair. Mukesh noticed Aryan and said, "Oh! You have come. I wanted to talk to you."

"Me?" Aryan said, confused.

"Yes! You." After pausing for a moment, he again said, "Me and your mother have decided that from now on, you will contribute towards the expanses of the house. My friend has a business in the next village. You will go there and work with him." Mukesh said this in one go. Aryan realised where they were coming from. "But father, I am still in 12th. I need to go to college. I also want higher education. I want to build a career. I can not work right away." Aryan said, rejecting their proposal. Mukesh snapped and said, "Who is gonna pay for that? Huh! You are 18 years old now and have to share the responsibilities. I am not going to pay for your expenses, and about the college, forget about it. You are not going to make it. You are just a dumb person."

"But father, I am trying my best, please do not not do this to me. I beg you, please." Aryan was on his knees, pleading. He looked at his mother for help, but she looked away. "This is my final decision," Mukesh said, angrily. Wiping his tears, Aryan went to his room and locked the door. He was deeply hurt by all this. His dreams and his ambitions were crushed. He lost his senses. He stood up and grabbed the blade from his desk. He wanted to end all the pain and sorrow. He closed his eyes, and with a trembling hand, he cut his wrist. He started bleeding and a sharp pain pierced him. It wasn't new for him to hurt himself. He grabbed a cloth to cover his bleeding wrist. The wound on his wrist was not that deep but the wound on his heart, made by his father's decision was deeper. There was sweat all over his face, he was breathing heavily, and his head was hurting. The next day he locked himself in his room. He was not himself. New marks could be seen on his wrist. Aryan was exhausted, he lay on his bed tired. Aryan was on his bed when Mukesh called him for dinner. Without uttering a word Aryan went outside and joined them for food. " Father look, I got first prize," Ansh said happily. "Great job my son. You are so smart" Mukesh said, patting Ansh's head. "And here are some losers who can't even get a third position," Mukesh said, taunting Aryan. Shanta interrupted and said, "My lovely Ansh will be very successful one day." Aryan had had enough. He snapped and started yelling "Why are you two always like this, why do you always love Ansh, not me? I am your son too. Don't you love me? You can afford his

education but not mine because he is a little intelligent. Mother you never loved me like you do Ansh, and father never cheered up for me. You two are the worst parents ever. I hate you. I wish I had never been born into this family. I wish I was dead." A slap was heard across the room, Shanta had slapped Aryan. Ansh was scared and quietly went to his room. "Just enough. Enough of your talking. I wish you had never been born. I wish you had never come into my life. I hate you, I hope you die." Shanta said it in one breath, tears rolling down her cheeks. Aryan was now heartbroken, the words he just heard from his mother felt unreal. He couldn't believe his mother. He felt dizzy, his heart shattered into pieces, he looked at his mother and then his father. In tears, he went back to his room. Mukesh comforted Shanta after Aryan left for his room.Aryan, who was heartbroken by all this, thought of ending his life. But he was scared. He cried in his bed and slept. The next morning there was a knock at his door. He thought of not opening, but eventually, he did. It was Ansh. "Maa and Papa are calling you for breakfast." Aryan thought for a second and went to the kitchen where his father was sitting on the dining chair and his mother was serving food. "Come and sit here," Mukesh said, looking at Aryan. Aryan sat on the chair quietly. I've decided I will let you finish your 12th and you can do any job you want after that only if you get at least 90 percent. It will be a deal between us. So what do you say? Aryan looked at his father shocked, tears started to roll down his eyes. He was happy to know that he can complete his 12th now. "So do you agree with this Aryan?" Mukesh said. "Yes Father," He said, while crying. Shanta interrupted "I'm sorry beta I didn't know we were not good to you, it's not that we don't love you, we love you as much as we love Ansh, if we were rude, sorry for that my child. From now on, I will be more careful. Just forgive us our child. We are sorry." Shanta was also crying. Aryan went to her, and hugged her "I forgive you Mom, and I love you too." "You better wipe your runny nose Aryan or you will be called a nosy kid in school," Mukesh said, while looking at Aryan. Everyone laughed at this, though it was not a good joke, it was funny at that time. Aryan thought (aide) "Although this family is not perfect. But it was somehow good. I know I was treated a little odd but it wasn't their fault. Everyone has some flaws in them. But in the end, everyone is together. It might take some time for me to be good in my studies and get on my parents' expectations but I will try my best." Everyone in the family ate their breakfast and left for the day ahead of them.

Yamuna Thakur , B.A 2nd year

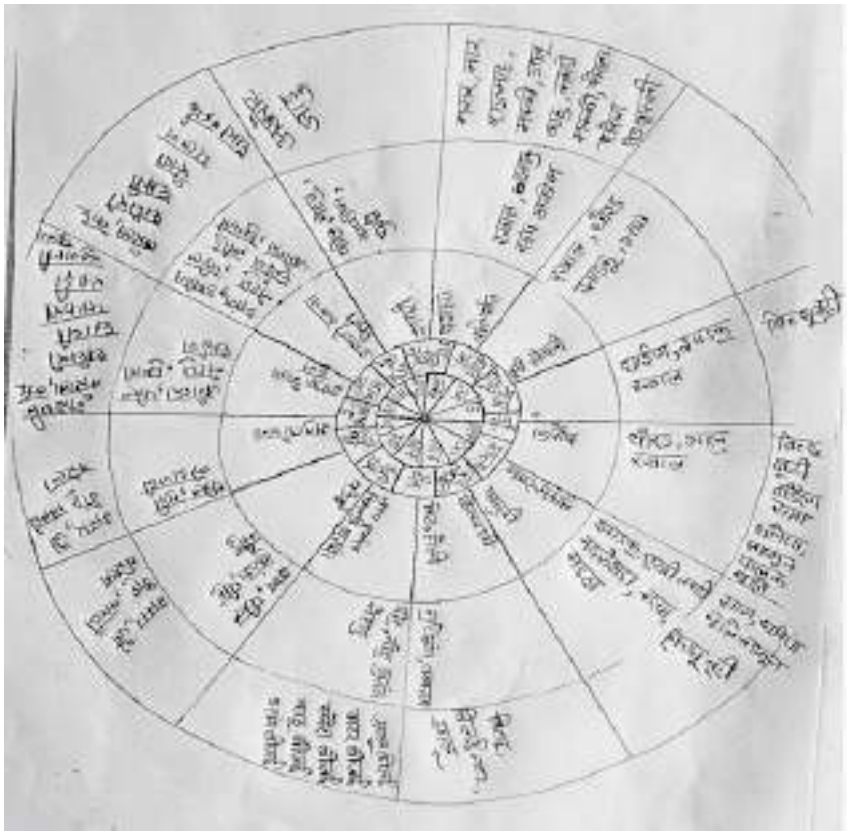

Visit To The World Book Fair

On 31st January 2024, our college planned its first-ever trip to a book fair at Pragati Maidan, Delhi. We were filled with excitement and could not wait to explore Delhi! Our college paid for the whole trip. At first, only 6 or 7 of us were interested, but guess what? Word spread and we ended up with 31 students, plus our professors, Dr. Anil Kumar and Dr. Dabe Ram. Dr. Anil Kumar even got our parents to sign permission slips. Our journey started on January 31st at 6:00 p.m. sharp! We hopped onto a super comfortable Volvo bus and looked excited. We voted Arjun and Yuvnish as our group leaders, and they were the best! For dinner, we had a delicious Mandiyali Dham near Mandi. The bus ride was filled with games and sing-alongs. We reached Delhi around 6:30 a.m. and stayed at the beautiful Birla Mandir, a temple dedicated to Sri Lakshmi Narayan. After a little rest, we had breakfast at 10:00 a.m. and headed straight to

Pragati Maidan for the World Book Fair. We took the metro, which was surprisingly easy, and soon we were at the entrance. There was a huge crowd. We started by taking a group photo. We wanted to meet some authors, but they were in a VIP area. We explored every corner, even with our feet aching. We found a cool section with Japanese anime and Indian cartoons and bought some books. Finding books was super easy. They had sections for every type of book, so one could quickly find what one liked. The kids' area was so much fun. Persons dressed up as cartoon characters were playing with the kids, and everyone was laughing. After looking at all the books, we were hungry. Good thing there were food stalls! They had all sorts of yummy food, and it was delicious. Besides the books, there were programs showcasing plays, songs, and dance. Time flew by, and it was already 3:00 p.m. when we decided to head back to Birla Mandir for dinner at 8:00 p.m. After dinner, we took a fun night walk to Gole Market. We did notice the air was a bit icky, unlike our fresh mountain air in Himachal Pradesh. We had some hilarious moments! One of our friend's sandals broke, and she had to go barefoot all day! And when we were in line for the book fair, we realized we had forgotten to buy tickets! We had to step aside while our professor bought tickets for us. We were a bit embarrassed, but it was funny!

The next day, our teacher booked a tourist bus for us. After breakfast, we went to Sarojini Market to do some shopping. Then, we went to Akshardham, which was packed but super peaceful. Next, we visited Raj Ghat Memorial, where we saw Mahatma Gandhi's samadhi and beautiful flowers. Then, we went to the Red Fort, which was amazing, but the area around it could have been cleaner. After that, we took tons of pictures at India Gate, even though it was crowded. We tried to see Rashtrapati Bhavan, but it was closed for elections. We were so tired after visiting Rashtrapati Bhavan and could barely walk. Our professor surprised us with auto rickshaws and turned our ride back into a fun auto rickshaw race. Our last stop was Humayun's Tomb, which was also closed. After a busy day of sightseeing, we started our long journey back to Banjar in Himachal Pradesh at 7:00 p.m. At last, we want to express our deepest gratitude to our professors, Dr. Anil Kumar and Dr. Dabe Ram, for their incredible guidance and support throughout the trip. Their dedication ensured we had a safe and enriching experience. We also want to thank our college for sponsoring this amazing educational journey. This trip was an unforgettable one, filled with learning, laughter, and lasting memories.

Yamuna Thakur, Akshita and Radhika, B.A 2nd year

खबरें

कुल्लू केसरी
स्वस्थ रहने के लिए सुबह का नाश्ता जरूरी : शिवांशु
उत्कृष्ट कार्य पर तीन कॉलेज छात्राएं नवाजी
कॉलेज की छात्राओं ने सीखे आत्म सुरक्षा के गुर
बंजार में रोजगार मेला 20 को
बंजार महाविद्यालय में करियर मार्गदर्शन
VIDEO : कुल्लू में 500 प्रतिभागियों ने सीखी भूकंप टीमों निर्माण की त...
भाषण से संयुक्त राष्ट्र संघ के इतिहास और महत्व पर व्यक्त किए विचार
न्यूज़ टोपीकल लाइव
देवदार, बान व दाडू के पौधे रोपे

Principal with CSCA Members

Door Singh (Jt. Sec.), Bhanupriya (Vice-President), Sh. R.K.Singh (Principal),
Tanisha Dogra (President), Anjali (Secretary)

Principal with Non-Teaching Staff

Left to right : Smt.Baldasi, Smt. Sandhya, Sh. Nihal Singh, Sh.Deewan, Sh.Rajneesh Kumar,
Sh. R.K.Singh, Sh. Govind Ram, Sh. Prabhat Bhardwaj, Sh. Kishan Das, Sh. Jeet Ram, Sh. Kamli Ram.

PRIDE OF OUR COLLEGE

(2nd in Youth Fest. gp. II
Folk Song. Solo)

Sunaina has a god-gifted voice and great potential—her talent speaks volumes and promises a bright future.

Sh. Anshul and Dr. Vikas
(Asstt. Prof. Music)

"Anu is a dedicated and hardworking student, blessed with natural musical talent and a refined understanding of music."

Sh. Anshul and Dr. Vikas
(Asstt. Prof. Music)

(3rd in Youth Fest. gp. II
Indian Classical Vocal, Solo)

Manoj Thakur has displayed remarkable dedication, skill, and consistency in the game of wushu to win a Silver Medal in HPU Inter-College Wushu championship for second consecutive year.

Dr. Pravesh Sharma
(Asstt. Prof. Phy. Edu.)

A disciplined and highly motivated athlete, Praveen Kumar, brought accolades to our college by grabbing a Silver Medal in HPU Inter-College Wushu championship.

Dr. Pravesh Sharma
(Asstt. Prof. Phy. Edu.)

Jhabe Ram, through a combination of technical precision, strategic execution, and mental toughness, brought laurels for our college by grabbing a Silver Medal in HPU Inter-College Wushu championship.

Dr. Pravesh Sharma
(Asstt. Prof. Phy. Edu.)